द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय

''मंटो की कहानियों का सामान्य परिचय''

प्रास्ताविक :-

मंटो की कहानियाँ, उनकी कहानी-कला के लगभग सभी रंगों का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ, मंटो की सोच और जिंदगी के बारे में उनके नजरिये को भी, बहुत हद तक, हमारे सामने पेश करती हैं।

मंटो ने खुद के बारे में 'सआदत हसन' में लिखा है : ''वह शब्दों के पीछे ऐसे भागता है जैसे कोई जाली शिकारी तितलियों के पीछे। वे उसके हाथ नहीं आतीं। यही कारण है कि उसके लिखने में सुंदर शब्दों की कमी है। वह लठ्ठमार है, जितने लट्ठ उसकी गर्दन पर पड़े हैं, उसने बड़ी खुशी से सहन किए हैं।''

मंटो ने 'एक खत' कहानी में एक जगह लिखा है : ''मुझे यह कितना बड़ा इत्मीनान है कि मैं, जो कुछ महसूस करता हूँ, वही जबान से बयान करता हूँ।''

संवेदना और अभिव्यक्ति की ऐसी सच्चाई, लापरवाही और एकतानता विरले लेखकों में होती है। भाषा और शिल्प को तराशने और सजाने में उनकी दिलचस्पी नहीं होती। रचना के भतरी दबावों से, कहानियों की अंदरूनी सच्चाईयों से, भाषा और शिल्प एक खास अंदाज में दमकने लगते हैं। ऐसे लेखक लीकों पर नहीं चलते, बँधी-बँधाई विचार-सरनियों का अनुसरन नहीं करते। वे अपना रास्ता खुद बनाते हैं - अपने अनुभवों और विचारों के बल पर। बाहरी आधार और आसरे उन्हें बेकार लगते हैं। वे अनुभव और परिस्थिति को एक दूसरे में ढ़ालते हुए, दोनों को टकराव में नियोजित करते हुए कहानियाँ लिखते हैं। ऐसे लेखक शुरू से आखिर तक अपने से संवाद और जिरह करते रहते हैं, आत्म-संघर्ष और आत्मालोचना के लम्बे दौरों में से गुजरते हैं। मंटो की कहानियाँ इस बात की गवाही देती हैं।

मंटो की कहानियाँ पाठकों की अंतश्चेतना को बुरी तरह झकझोरने वाली, तिलमिला देनेवाले विचारों तक ले जाने वाली और गहरी बेचैनी पैदा करने वाली हैं। पर यह बेचैनी महज व्यक्तिगत नहीं है। मुल्क और कौम की बेचैनी से जुड़ी हुई है। मंटो ने एक जगह लिखा है, ''अदब दर्जा हशरत है अपने मुल्क का, अपनी कौम का। वह उसकी सेहत और बीमारी की खबर देता रहता है।'' मंटो के अफसाने इस सेहत और बीमारी की खबर देते हैं - अपने खास अंदाज में। उनकी बेचैनी कहानियों की मार्फत पाठकों तक सीधी पहुँचती है और पाठक उत्तेजित और विव्हल हो जाते हैं। मंटो की कहानियों में यह बैचेनी अस्मिता के संकट के विभिन्न रूपों में मुखर हुई है।

मंटो ने जो कुछ लिखा है, उसे पूरी तरह से जाना ही नहीं, जिया भी है। कृष्णा सोबती का कहना सही है : ''मंटो का सरमाया - कथ्य, मुफ्त के माल की तरह सिर्फ यहाँ-वहाँ से, देख-सुनकर ही हथियाया हुआ नहीं है, वह दरअसल टोह-टोह के, टनटना के देखा-भाला हुआ पहले हाथ का माल है। हक का, कीमत अदा कर खरीदा हुआ।... कोई भी जो इंसान की रूहों पर चढ़े गिलाकों को उतारेगा, उधेड़ेगा, दिल-दिमाग पर तनी कनातों में झाँकेगा - उन्हें बाँह चढ़ाकर खींचेगा, वह बदलेमें खुद भी झँझोड़ा जाएगा। नंगा किया जाएगा। नाप लिया जाएगा। मंटो के साथ ऐसा ही हुआ।'' कथ्य का जो सरमाया मंटो के पास था, उसे उन्होंने मेहनत से खुद कमाया था, खतरों से भिड़कर जुटाया था और उसे फराखदिली से अपने लेखन के जरिये लुटाया भी था। मंटो ने जिंदगी से जूझते और टकराते हुए अनुभव और विचार अर्जित किए थे। उनके कथ्य में, इसीलिए कोई दुर्बोधता नहीं है।

मंटो के पास सुंदर शब्दों की कमी बेशक हो, उनकी भाषा में कथ्य को झलकाने की अद्‌भुत शक्ति है। कहानी कहते हुए वे चाहे कहीं का कही पहुँच जाएँ, उनकी आँख अपने कथ्य और संवेदना पर एकाग्र रहती है। मंटो इस शैली के उस्ताद हैं। उनकी कहानियाँ औरत-मर्द के रिश्तों से संबंधित हों या यौन व्यवहारों से, विभाजन से संबंधित हों या समाजार्थिक विसंगतियों से, मंटो की यह खास शैली हर जगह मिलेगी। मंटो की यह खास शैली महज लटका या युक्ति या अंदाजेबयाँ नहीं है। इस शैली पर मंटो के समूचे रचना-व्यक्तित्व की छाप है। यह शैली है चीजों की परतों को चीरते हुए, परदों को हटाते हुए, मुलम्मों को उघाड़ते हुए, सीधे-सीधे सच्चाई तक पहुँचने की और उसे स्पष्ट, दो टूक, बेबाक ढ़ंग से अभिव्यक्त करने की। एक करीबी और दवंग दोस्त की तरह मंटो स्थितियों, घटनाओं और पात्रों के भीतर इतने अनायास और तेजी से प्रवेश कर जाते हैं कि पाठक चकित रह जाते हैं या झटका महसूस करते हैं। यह झटका कहानियों के अंत में खास तौर पर महसूस होता है। उनके रचना-व्यक्तित्व की गहरी, अमिट छाप यहाँ देखी जा सकती है। कहानियों के अंत में वे कोई नसीहत या निष्कर्ष कभी नहीं देते। कहानी में उभर रहे संघर्ष या द्‌वंद्‌व का सरलीकरण या समाहार करने में भी उनकी दिलचस्पी नहीं है। वे कहानियों के अंत में प्रचलित नैतिकता का निषेध करते हैं और पाठकीय प्रत्याशाओं को बुरी तरह झकझोरते हैं।

मंटो के किस्सागो रूप की चर्चा अक्सर की जाती है। यह सही है कि किस्सागोई उन्हें खूब आती है, पर वे उसके गुलाम नहीं बने हैं। उर्दू की किस्सागोई की परंपरा से अलग वे किस्सागोई की नयी परंपरा का सूत्रपात करते हैं। किस्सागोई का लाभ वे उठातें हैं पर उस हद

तक ही जहाँ उसके जरिए पात्रों की मानसिकता को उघाड़ने में मदद मिलती हो या कहानी की संवेदना में इजाफा होता हो। कथा-रस से अभ्यस्त पाठकों को कई बार लगता है कि कहानी खत्म हो गई है और मंटो उसे बेकार खींच रहे हैं। पर, दरअसल, ऐसा नहीं है। मंटो कथा-प्रसंगो को उतना ही तानते हैं जितना जरूरी हो - स्थिति के पीछे की हरकतों को पकड़ने के लिए या चरित्र की भीतरी दुनिया को उजागर करने के लिए। मंटो की कहानियों में फालतू ब्योरे शायद ही कहीं मिलें। ब्योरों को पात्रों की मानसिक दशाओं और यथार्थ स्थितियों के अंकन के साथ वे इस कुशलता से संबंध कर देते हैं कि कहानी का फलक और प्रभाव बढ़ जाता है।

मंटो की यह विशेषता है कि वह अपनी कहानियों में, अपने निजी दृष्टिकोण और विचार-धारा के साथ, दखलन्दाजी की हद तक, पूरे-के-पूरे मौजूद रहते हैं; अपने पात्रों की खुशियों के साथ वे उनकी तकलीफें और दु:ख भी सहते हैं। यही वजह है कि उनकी कहानियों में संस्मरण का हल्का-सा रंग हमेशा झलकता है - किस्सागोई का वह स्पर्श, जो किसी बयान को यादगार बनाने के लिए बहुत जरूरी है।

लेकिन यह किस्सा-गोई, महज दिलचस्पी पैदा करने के लिए, सिर्फ चंद गाँठ के पूरे और दिमाग से कोरे 'साहित्य-प्रेमियों' का मनोरंजन करने के लिए नहीं है। किस्सागोई का यह अंदाज, एक ओर तो आम आदमी को इस बात का एहसास कराता है कि मंटो उसके साथ है, वे सारे दुख-सुख महसूस कर रहे हैं, जो आम आदमी की नियति है; दूसरी ओर यह भी बताता है - ये कहानियाँ मंटो ने इसलिए लिखी हैं कि पाठक यह जानें, उनकी नियति क्यों ऐसी है, जिससे वे अपनी नियति को बदलने के लिए मुनासिब कारवाई कर सकें।

कहानी-लेखन का प्रारंभ :

एन्ट्रन्स तक की पढ़ाई मंटो ने अमृतसर के मुस्लिम हाईस्कूल में की थी। सन 1931 में उन्होंने हिंदू सभा कॉलेज में दाखिला लिया। उन दिनों पूरे देश में और खासतौर पर अमृतसर में आजादी का आंदोलन पूरे उभार पर था। जालियाँवाला बाग का नरसंहार 1919 में हो चुका था जब मंटो की उम्र कुल सात साल की थी, लेकिन उनके बाल-मन पर उसकी गहरी छाप थी। क्रांतिकारी गतिविधियाँ बराबर चल रही थीं और गली-गली में इनकिलाब जिंदाबाद के नारे सुनाई पड़ते थे। दूसरे नौजवानों की तरह मंटो भी चाहते थे कि जुलूसों और जलसों में बढ़चढ़कर हिस्सा ले और नारे लगाए, लेकिन पिता की सख्तगिरी के सामने वे मन मसोसकर रह जातें। आखिरकार उनका यह रूझान अदब से मुखातिब हो गया। उन्होंने पहला अफसाना लिखा 'तमाशा' जिसमें जालियाँवाला नरसंहार को एक सात साल के बच्चे की

नजर से देखा गया है। इसके बाद कुछ और अफसाने भी उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों पर लिखें।

सन 1932 में मंटो के पिता का देहांत हो गया। भगतसिंह को उससे पहले फाँसी दी जा चुकी थी। मंटो ने अपने कमरे में पिता के फोटो के नीचे कार्निश पर भगतसिंह की मूर्ति रखी और कमरे के बाहर एक तख्ती पर लिखा 'दार-उल-अहमर' यानी 'लाल कमरा'। जाहिर है कि रूसी सहित्य से उनकी दिलचस्पी बढ़ रही थी। इन्हीं दिनों उनकी मुलाकात अब्दुल बारी नाम के एक पत्रकार से हुई जिन्होंने उन्हें रूसी साहित्य के साथ-साथ फ्रांसीसी साहित्य पढ़ने के लिए भी प्रेरित किया और उन्होंने विक्टर ह्यूगो, लॉर्ड लिटन, गोर्की, चेखव, पुश्किन, ऑस्कर वाइल्ड, मोपासाँ आदि का अध्ययन किया। अब्दुल बारी की प्रेरणा पर ही उन्होंने विक्टर ह्यूगो के एक ड्रामे - 'द लास्ट ड़ेज ऑफ ए कंडेम्ड' - का उर्दू में तर्जुमा किया, जो 'सरगुजश्त-ए- असीर' शीर्षक से लाहौर से प्रकाशित हुआ। यह ड्रामा ह्यूगो ने मृत्यूदंड के विरोध में लिखा था जिसका तर्जुमा करते हुए मंटो ने महसूस किया कि इसमें जो बात कही गई है वह उनके दिल के बहुत करीब है। अगर मंटो के तमाम अफसानों को ध्यान से पढ़ा जाए तो यह समझना मुश्किल नहीं होगा कि इस ड्रामे ने उनके रचनाकर्म को कितना प्रभावित किया था।

विक्टर ह्यूगो के इस तर्जुमे के बाद मंटो ने ऑस्कर वाइल्ड के ड्रामे 'वेरा' का तर्जुमा शुरू किया। इस ड्रामे की पृष्ठभूमि 1905 का रूस है और इसमें जार की क्रूरताओं के खिलाफ वहाँ के नौजवानों का विद्रोह ओजपूर्ण भाषा में अंकित किया गया है। इस ड्रामे का मंटो और उनके साथियों के दिलो-दिमाग पर ऐसा असर हुआ कि उन्हें अमृतसर की हर गली में मॉस्को दिखाई देने लगा।

दो ड्रामों का अनुवाद कर लेने के बाद मंटो ने अब्दुल बारी के ही कहने पर रूसी कहानियों का एक संकलन तैयार किया और उन्हें उर्दू में रूपांतरित करके 'रूसी अफसाने' उन्वान से प्रकाशित करवाया।

इन तमाम अनुवादों और फ्रांसीसी तथा रूसी साहित्य के अध्ययन से मंटो के मन में कुछ मौलिक लिखने की कुलबुलाहट होने लगी तो उन्होंने पहला अफसाना लिखा - 'तमाशा' जिसका जिक्र उपर हो चुका है।

इधर मंटो की ये साहित्यिक गतिविधियाँ चल रही थीं और उधर उनके दिल में आगे पढ़ने की ख्वाहिश पैदा हो गई। आखिर फरवरी 1934 को बाईस साल की उम्र में उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया। यह यूनिवर्सिटी उन दिनों प्रगतिशील मुस्लिम

नौजवानों का गढ़ बनी हुई थी। अली सरदार जाफरी से मंटो की मुलाकात यहीं हुई और यहाँ के माहौल ने उनके मन में कुलबुलाती रचनात्मकता को उकसाया। उन्होंने अफसाने लिखने शुरू कर दिए। 'तमाशा' के बाद दूसरा अफसाना उन्होंने 'इंकिलाब पसंद' नाम से यहाँ आकर ही लिखा जो अलीगढ़ मैगजीन में प्रकाशित हुआ। यह मार्च 1935 की बात है। फिर तो सिलसिला शुरू हो गया और 1935 में मंटो का पहला मौलिक उर्दू कहानियों का संग्रह प्रकाशित हुआ, 'उन्वान' या 'आतिशपारे'।

मंटो की कहानियों का यह सिलसिला ताउम्र बड़ी तीव्र गती से बढता गया। अपनी उन्नीस साल की जिंदगी में उन्होंने कई जबरदस्त अफसाने लिखें। जिंदगी के आखिरी दिनों तक वह कहानी लिखते रहें। कहानियों के सफर में थोडा-सा भी खंड उन्होंने नहीं डाला।

मंटो की कहानियों का सामान्य परिचय :

मंटो ने कुल 230 कहानियाँ लिखीं और उनके कहानी-संग्रह 35 हैं। उनके कहानी-संग्रह इस प्रकार हैं -

1) आतिशपारे
2) अफसाने और ड्रामे
3) मंटो के अफसाने
4) धुआँ
5) चुगद
6) मजीद
7) ठंडा गोश्त
8) नमरूद की खुदाई
9) खाली बोतलें, खाली डिब्बे
10) सड़क के किनारे
11) बादशाहत का खात्मा
12) ऊपर, नीचे और दरमियान
13) शैतान
14) पर्दे के पीछे
15) चश्मे रोजन
16) गुलाब का फूल
17) मजजूब कीबड
18) सरकंडों के पीछे
19) सियाह हाशिए
20) फुँदने
21) बगैर इजाजत
22) रत्ती, माश, तोला
23) बुर्के
24) मीना बाजार
25) शिकारी औरतें

इनके अलावा बाद में कई संपादकों ने उपर्युक्त कहानी-संग्रहों में से चुनिंदा कहानियों को लेकर कई कहानी-संकलनों के संपादन किए, वो इस प्रकार हैं -

1) मंटोनामा
2) मंटो की कहानियाँ

3) मंटो की तीस कहानियाँ 4) मंटो की चर्चित कहानियाँ

5) मंटो की बदनाम कहानियाँ

मैंने नरेंद्र मोहन द्वारा संपादित 'मंटो की कहानियाँ' यह पुस्तक आधार ग्रंथ के तौरपर इस्तमाल किया है। इसमें कुल 61 कहानियाँ है। इसमें उपर्युक्त कहानी-संग्रहों में से चुनिंदा लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध, साथ ही मंटो की रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट करनेवाली कहानियाँ हैं। मंटो की इन कहानियों का अनुवाद श्री शंभु यादव जी ने परिश्रम से किया है। श्री देवेन्द्र इस्सर ने अनुवाद कार्य को देखा-पड़ताला है - मंटो की भाषा, खास अंदाज और शैली को ध्यान में रखते हुए। डॉ. सादिक जी के सुझावों से पुस्तक का रूप संवरा है।

इस पुस्तक में मंटो की कहानियों को ऐतिहासिक विकास-क्रम और कहानी-संग्रहों के प्रकाशन क्रम से देने की परिपाटी का निर्वाह नहीं किया गया है। इस ढ़ंग की पद्धति उपयुक्त हो सकती थी अगर मंटो की कहानियों को तीन-चार बड़े संकलनों में देने की योजना होती। यह चूँकि मंटो की चुनी हुई कहानियों की पुस्तक है, इसलिए कहानियों के विकास-क्रम और प्रकाशन क्रम का उतना महत्व नहीं रह जाता जितना चयन दृष्टि और कहानियों के साथ लिपटे हुए कहानी कला के विभिन्न पहलुओं का । इसी तरह कहानियों को पाँच खंडों में बाँटने के पीछे मुख्य आधार कहानियों की अंतर्वस्तु है, साथ ही इसके कहानियों को एकसाथ, एकबारगी देने से पैदा हो जाने वाली एकरसता को तोड़ने का उपक्रम भी किया गया है। एक बात और, मंटो की दो कहानियाँ 'मंत्र' शीर्षक से मिलती हैं। कहानियों के मिजाज और प्रवृत्ति को देखते हुए एक कहानी का नाम 'मंत्र' रहने दिया गया है और दूसरी का 'मंतर' कर दिया है।[1]

इस पुस्तक में 'बकलम खुद' के अंतर्गत मंटो के तीन आत्मकथात्मक निबंध दिए गए हैं - 'सआदत हसन', 'मेरी शादी' और 'जहमत-ए-महर-ए-दरखशां'। इनमें मंटो खुद अपने आमने-सामने हैं। विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए कहानियाँ लिखने और आत्म-संघर्ष के लंबे दौरों से गुजरने की ग्वाही इनसे मिलती है। उनकी कहानियों को समझने में आत्मकथात्मक अंश सहायक हो सकते हैं, इसलिए उन्हें यहाँ दिया गया है।

मंटो की रचनाओं में हमेशा एक नया रस पाया जाता है। मंटो आमतौर पर दो तरह की कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं : 1) ऐसी कहानियाँ, जिनमें सेक्स के किसी न किसी सूक्ष्म पहलू का उद्घाटन है, जो बहुत वादविवाद का कारण बनीं, अश्लील कहलायीं और जिनके खिलाफ मुकदमें चलें, 2) ऐसी कहानियाँ, जिनमें समाज अथवा व्यवस्था के खिलाफ भयंकर क्रोध और विक्षोभ है।

पहली तरह की कहानियों में 'खुशियाँ', 'धुआँ', 'ब्लाउज', 'काली सलवार', 'बू', 'नंगी आवाजें' और 'ठंडा गोश्त' के नाम लिये जा सकते हैं। और दूसरी तरह की कहानियों में 'टोबा टेकसिंह', 'टिथवाल का कुत्ता', 'नया कानून', 'शहीदसाज', 'हतक', 'स्वराज्य के लिए', 'मम्मी', 'खोल दो', 'नारा' आदि।

लेकिन मंटो ने और भी तीन-चार तरह की कहानियाँ लिखी हैं -

तीसरी तरह की कहानियाँ ऐसी हैं - जिनमें न तो कथाकथित अश्लीलता है, न समाज तथा व्यवस्था के खिलाफ किसी तरह का गमो-गुस्सा ! वे मानव चरित्र के विभिन्न पक्षों का उद्‌घाटन करने वाली बहुत ही कलापूर्ण प्यारी लेकिन उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। 'बाबू गोपीनाथ', 'मंत्र', 'मैडम डिकोस्टा', 'प्रगतिशील' और 'डरपोक' ऐसी ही कहानियाँ हैं। मंटो ने जब मौलिक कहानियाँ लिखनी शुरू कीं तो उनपर समरसेट मा'म का असर था और अपने तमाम दोस्तों को वे मा'म मे अफसाने पढ़ने की सलाह देते थे। उपेंद्रनाथ अश्क जी कहते हैं, ''मैं यह समझता हूँ कि मंटो ने चाहे कहानी लिखना तो मा'म के प्रभाव में शुरू किया।''[2] इन तीसरी तरह की कहानियों पर मा'म का प्रभाव है। लेकिन जल्दी ही उस प्रभाव से वह निकल गए। प्रगतिशील आंदोलन का जमाना था और तत्कालीन सभी कथाकारों की तरह मंटो पर भी उस आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। मंटो की कहानियों में ये दोनों प्रभाव उनकी अंतिम कहानियों तक देखे जा सकते हैं। एक तरफ ऐसी कहानियाँ हैं, जिनमें कोई सामाजिक उद्‌देश्य नहीं, वे अत्यंत कलाकारिता से मानव मन के किसी अछूते पहलू का उद्‌घाटन करती हैं, दूसरी ओर ऐसी कहानियाँ हैं, जिनमें समाज या व्यवस्था के खिलाफ भयंकर विक्षोभ है और इनकी सोद्‌देश्यता असंदिग्ध हैं।

उपेंद्रनाथ अश्क जी का मानना है कि मा'म से प्रभावित होकर भी मंटो मा'म की अपेक्षा बेहरत कथाकार हैं। इस संदर्भ में उनका कथन है, ''मुझे मंटो हमेशा मा'म की अपेक्षा बेहतर और उँचे कथाकार लगे हैं, क्योंकि जहाँ तक मैंने मा'म को पढ़ा है, वह मानव की नियति के प्रति निरपेक्ष है - सिनिसिज्म की हद तक। वह मानवनियति का महज दर्शक या चितेरा है, जबकि अपनी उत्कृष्ट कहानियों में मंटो मानव-नियति के प्रति निरपेक्ष नहीं है। वे उसमें भागीदार हैं, इन्वाल्वड हैं, उसका अंग हैं, अपनी हर ऐसी कहानी में मंटो स्वयं मौजूद हैं - 'खुशिया' में खुशियाँ है तो 'ब्लाउज' में मोमिन, 'हतक' में सुगंधी हैं तो 'नंगी आवाजें' में भोलू, 'स्वराज्य के लिए' में गुलाम अली हैं तो 'प्रगतिशील' में जोगिंदर, 'नया कानून' में मंगू कोचवान हैं तो 'टोबा टेकसिंह' में पागल सिक्ख, 'बाबू गोपीनाथ' में वे बाबु गोपीनाथ हैं तो

'मंतर' में नन्हा राम। मंटो की कहानियों में जो भी व्यक्ति सहता है - वह समाज अथवा व्यवस्था का जुल्म हो अथवा अपनी भावुकता - जनित मूर्खता का परिणाम या फिर अपनी विकृतियों (परवर्शन्ज) की मार - वह मंटो स्वयं है। वे महज दर्शक नहीं भोक्ता हैं। इसीलिए मा'म से प्रभावित होकर भी वे मा'म की अपेक्षा बेहतर कथाकार हैं।''[3]

मंटो ने चौथी तरह की भी कुछ कहानियाँ लिखी हैं, इनसे हमें मंटो के स्वभाव की कमजोरियों, शहजोरियों, उनके गमो-गुस्से, उनके मानसिक द्वंद्व और उनके दृष्टिकोण का, खुद उनके शब्दों में, पता मिलता है। 'एक खत' और 'दो गड्ढे' इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं।

पाँचवी तरह की कहानियाँ मंटो के यहाँ ऐसी मिलती हैं, जिन्हें उर्दू में 'अफसांचे' और हिंदी में 'लघु-लघु कथाएँ' कहा जाएगा। ये कहानियाँ रूसी कथाकार सलोगब की शैली में लिखी गई हैं और उसी की कहानियों की तरह यदि गंभीरता का पहलू न लिए हुए हों तो चुटकुले कहला सकती हैं। मंटो के कुछ विरोधी आलोचकों ने यह नाम देते हुए उनका मजाक भी उड़ाया है। ये कहानियाँ मंटो ने अधिकांशत: देश के विभाजन से प्रभावित होकर लिखी थीं और ये सब उनकी पुस्तक 'सियाह हाशिए' में संकलित हुईं। इनमें 'जूता', 'हैवानियत', 'शान्ति', 'बँटवारा', 'मिस्टेक', 'किस्मत' बहुत अच्छी उतरी हैं। उनमें मंटों की कला के तमाम गुण और उनके अंतर की तमाम यंत्रणा मौजूद है।

मंटो ने छठी तरह की सिर्फ एक कहानी लिखी है - फुँदने! यह ऐसी कहानी है, जैसी कि उर्दू के जदीदिए याने अपने आपको अत्याधुनिक कथाकार कहलानेवाले (बलारज मैनरा और उनके साथी) लिखते हैं। इसी लिए इस कहनी को उन्होंने परचम के तौर पर अपनी शोभायात्रा में (जो एक वृहद संकलन के रूप में निकली है) इस्तेमाल कर लिया है। वे लोग मानो कहना चाहते हैं कि मंटो की अन्य कहानियाँ महत्वपूर्ण नहीं, सिर्फ यही कहानी महत्वपूर्ण है। यह और बात है कि यह कहानी केवल जदीदियों के झंडे के ही काम आयेगी।

इसप्रकार मंटो ने आमतौर पर छे तरह की कहानियाँ लिखीं। आगे 'मंटो की कहानियाँ' किताब की कहानियों का सामान्य परिचय क्रम से दिया है -

सआदत हसन

मंटो ने इस कहानी में खुद के बारे में खुद के ही विचार व्यक्त किए हैं। इस कहानी को आत्मनिवेदनात्मक निबंध भी कहा जा सकता है। इस कहानी में मंटो खुद आमने-सामने हैं।

इस कहानी में मंटो ने खुद के व्यक्तित्व जन्म, माता-पिता, परिवार, पत्नी आदि के बारे में विचार व्यक्त किए हैं। यह कहानी उनके व्यक्तित्व पर काफी मात्रा में प्रकाश

ड़ालती है। खुद अपने आपको अंतरतम में देख अपने ही व्यक्तित्व के पहलूओं को सच्चाई की नींव पर सामने रखते हैं। मंटो खुद के बारे कभी कुछ छुपाते नहीं थे, जो उन्होंने जिया था वहीं यथार्थ उन्होंने कहानियों में प्रकट किया था। यह कहानी उनके अंतरमन के सूक्ष्म से सूक्ष्म मनोवृत्तीयों का परिचय कराती है।

मंटो उर्दू के बहुत बड़े साहित्यकार थे लेकिन इंटर परीक्षा में वे इसी के कारण फेल हुए थे। कहानी में उन्होंने लिखा है कि उर्दू उन्हें अब भी नहीं आती। प्राय: वे कहा करते थे कि वे कहानी नहीं सोचते, स्वयं कहानी उन्हें सोचती है, उनकी जेब में अनगिनत कहानियाँ पड़ी होती हैं, बल्कि वास्तविकता इससे उलटी थी, इसलिए वे खुदको 'फ्रॉड' कहते हैं। मंटो जो खुदा को न माननेवाले नजर आते हैं लेकिन कागज पर मोमिन बन जाते हैं। यूँ तो मंटो के विषय में मशहूर है कि वह साफ-साफ कहने वाले हैं, लेकिन मंटो खुद इससे सहमत नहीं थे। वे खुद को अव्वल दर्जे का झूठा बताते हैं, साथ ही चोर, विश्वासघातक और भीड़ इकट्ठी करनेवाले हैं। इस संदर्भ में उन्होंने अपनी पत्नी तथा घरवालों का उदाहरण दिया है। वे झूठ खूब बोलते थे लेकिन घरवाले समझते थे उनकी हर बात झूठी है।

मंटो खुद को 'अनपढ़' कहते हैं - इस दृष्टिसे कि उन्होंने कभी मार्क्स, फ्रायड, हीगल, हैबल, एमिस को ठीक ढ़ंग से जाना ही नहीं लेकिन आलोचक कहते हैं कि वह तमाम चिंतकों से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा है कि वे किसी दूसरे के विचारों से प्रभावित ही नहीं हैं। बल्कि उनका यह मानना था, कि समझाने वाले सब मूर्ख हैं। दुनिया को समझाना नहीं चाहिए, उसको स्वयं समझना चाहिए। उन्होंने किसी का अनुकरण नहीं किया।

अंत में उन्होंने खुद के बारे में जो बयान किया है, इससे उस महामानव के व्यक्तित्व के सच्चाई का आईना अपने आप ही खुलकर सामने आ जाता है। वे कहते हैं, ''मैं आपसे पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मंटो, जिस पर अश्लील लेख के विषय में कई मुकदमे चल चुके हैं, बहुत शीलपसंद है। लेकिन मैं यह भी कहे बिना नहीं रह सकता कि वह एक ऐसा पायदान है, जो स्वयं को झाड़ता-फटकता रहता है।''[4]

मेरी शादी

मंटो की शादी किन हालातों में हुई इसका ब्यौरा उनकी 'मेरी शादी' इस कहानी में मिलता है। शादी की घटना को उन्होंने अपने अंदाज में बयाण किया है। सारी हकीकत को बहुत ही दिलचस्प और किस्सागोई ढ़ंग से पेश किया है।

मंटो के कथनानुसार उनके जिंदगी के तीन बड़े हादसे थे उनमे से एक हादसा था शादी का। कमाने की बात से लेकर उन्होंने अपनी माँ को ऐसेही बात-बात में कह दिया, ''घर

में बीवी होती तो आप देखती मैं कैसे कमाता हूँ।'' और इसी मुद्दे को लेकर माँ ने शादी करने की बातचीत शुरू की। माँ उन्हें लड़की दिखाने ले चली। लड़की के पिता सरकारी नौकर थे। पुलिस के महकमे में 'फिंगर प्रिंट स्पेशालिस्ट'। मंटो ने अपने सारे हालात बता दिए और उन्हें मंटो पसंद भी आ गए। मजाक-मजाक में की गई बात गले पड़ गई। और बहुतही आर्थिक कमजोरियों के बावजूद शादी हो गई। इन सारी स्थितियों का सामना करते-करते वे अपनेही शादी में बेहोश तक हुए थे। नई नवेली बीवी और खुद के लिए रहने का इंतजाम करते करते उनके नाक में दम आ गया। फिर भी बहुत ही उलझनों के बावजूद साफिया से उनकी शादी ठीक ढ़ंग से हो गई।

जहमत-ए-महर-ए-दरखशां

मंटो बंबई छोड़कर कराची से होते हुए लगभग 7 या 8 जनवरी, 1945 को लाहौर पहुँचे। इस आत्मकथनात्मक निबंध में उनकी वहाँ लिखी हुई कहानी 'ठंडा गोश्त' पर अश्लीलता के आरोप के कारण चलाए गए मुकदमें का विवरण मौजूद है। इस प्रसंग की सारी हकीकत को उन्होंने अपने लब्जों में यहाँ पेश किया है।

अफसाना 'खोल दो' भी इन्हीं दिनों मंटो ने लिखा था जो 'नुकूश' में छपी और इसके लिए उसपर प्रतिबंध लगाया गया। मंटो ने इस मुकदमें में आखिर थक कर जुर्माना अदा किया। अब उन्होंने लिखा अफसाना 'ठंडा गोश्त' कई पत्रिकाओं ने न छापते हुए वापिस लौटा दिया था। मगर आरिफ साहब ने 'जावेद' के विशेषांक मार्च 1949 में उसे छाप दिया। उसपे अश्लीलता के कारण मुकदमा चलाया गया।

मुकदमें मे हुई भागदौड़, तारीखें, गवाह आदि तथा अदालत में हुई सारी हकीकत बड़ी दिलचस्प ढ़ंग से यहाँ लिखी है। मॅजिस्ट्रेट साहब तथा गवाहों के सवाल-जवाब का किस्सा यहाँ दिया है। मुकदमे के चलने से उसके अंत तक की बातों को यहाँ खुलकर बताया है। बाद में इस मुकदमे से वे छूट गए।

तमाशा

मंटो की यह पहली कहानी मंटो के नाम के बगैरे अमृतसर से प्रकाशित 'खल्क' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी जलियाँवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता के घृणित नरसंहार से प्रेरित मानी जाती है।[5] इस कहानी में खालिद के शहर के ऊपर उड़ते हवाई जहाज बेचैन, अंदर ही अंदर सुलगते शहर पर परचे गिराते हैं। शहर खूनी हादसे (जलियाँवाला नरसंहार) से बेचैन है। सशस्त्र पुलिस बल गश्त लगा रही हैं। जलसों के

आयोजन की सरकारी मनाई है फिर भी 'शहर के लोग बादशाह के मना करने पर भी शाम के करीब एक आम जलसा करने वाले हैं।'- डर है कि एक और खौफनाक हादसा कहीं होकर न रहे।

शहर में गोलीबारी होने लगती है। खालिद समझता है - हवाई जहाज से गिरे परचों में किसी तमाशे की सूचना होगी। वही तमाशा शुरू हो गया है। बाजर में चली गोली से एक घायल लड़के को अपने मकान के सामने देख खालिद रोने लगता है। घरवाले उसे बहला देते हैं - कि लडके की पिटाई स्कूल में हुई है। उसने सबक याद नहीं किया था। खालिद सोते वक्त दुआ करता है कि पहाड़ा याद न करने की वजह से उसकी पिटाई न हो। खालिद को यह भी आशंका थी कि हवाई जहाज से गोले फेंके जाएँगें, सो वह अपनी नकली बंदूक से निशानेबाजी का अभ्यास करता है ताकि वह पूरी तरह बदला ले सके। मंटो ने लिखा है, ''काश ! प्रतिशोध का यही नन्हा जज्बा हर शख्स में पैदा हो जाए।'' यह 'नन्हा जज्बा' भगतसिंह के बचपन से ताल्लुक रखता है। भगतसिंह के जीवनीकार बताते हैं कि नन्हें भगतसिंह ने बंदूक का एक पौधा लगाया। उसका खयाल था कि जैसे मक्के के पौधे से मक्का पैदा होता है, उसी तरह बंदूक की फसल भी होगी और जलियाँवाला बाग का बदला लिया जा सकेगा। कोई ताज्जुब नहीं कि मंटो के अध्ययन-कक्ष में भगतसिंह की मूर्ति रखी रहती थी। जैसे नन्हें खालिद में भगतसिंह हैं वैसे ही मंटो में नन्हा खालिद है।[6]

इस कहानी में घटना को स्थूल ढ़ंग से चित्रित नहीं किया गया है बल्कि एक बच्चे (खालिद) की मानसिकता के जरिए दमनकारी प्रवृत्तियों को बेनकाब किया गया है। खालिद की अबोध जिज्ञासाएँ और प्रतिक्रियाएँ इन प्रवृतियों की क्रूरता को उभारने में और भी सहायक रही हैं।

सन 1919 की एक बात

इस कहानी में इतिहास की घटनाओं के सहारे कहानी बुनने की कला देखी जा सकती है। मंटो ने अपने खास लहजे और शैली में ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं पर आधारित कहानियाँ लिखीं। प्रस्तुत कहानी भी उसी प्रकार की है। कहानी की घटनाएँ नये अर्थों का बोध कराती हैं।

सन् 1919 में रौलेट एक्ट के खिलाफ सारे पंजाब में आंदोलन चल रहा था। गांधी जी का दाखिला पंजाब में बंद कर दिया था और वे जब इधर आ रह थे तब उन्हें रोककर, गिरफ्तार कर वापस बंबई भेजा गया। परिणाम स्वरुप अमृतसर में हड़ताल हो गयी तथा नौ-अप्रैल को डॉक्टर किचलू और सत्यपाल गिरफ्तार कर लिए गए। तब डिप्टी-कमिशनर बहादूर

के पास जाकर अपने प्रिय नेताओं की जिलावतनी के हुक्म रद्द कराने की दरख्वास्त करने के लिए लोग बड़े ही शांतिप्रिय ढ़ंगसे, निहत्ये गए। पर वहाँ अंग्रेजो ने गोलीबारी शुरु की। गोलियाँ खाकर भीड़ बिफर गई। खूब लूटमार मची। मलका के वुत को तोड़ने की कोशिश की गई। टाउन हाल और तीन बैकों को आग लगी और पाँच या छः यूरोपियन मारे गए। इसमें जो पाँच या छः यूरोपियन मारे गए थे, उसका बदला लेने के लिए जालियाँवाले बाग का खूनी कांड हुआ।

जब अंग्रेजों ने गोलीबारी शुरु की तब एक शख्स ने जिसका नाम मुहम्मद तुफैल था, मगर थैला कंजर के नाम से मशहूर था और एक वेश्या की कोख से जन्मा था, बगावत की थी। उसके वीरता का किस्सा यहाँ मंटो ने बताया है। उसे तीन गोलियाँ लगी थी। फिर भी उसने गोरे को नहीं छोड़ा , बाद में जब देखा गया तो उसका बदन गोलियों से छलनी हो गया था। उसकी दो वेश्या बहने थीं - शमशाद और अल्मास मंटो ने अपने एक हमसफर साथी के जरिए उसके बयान में कहानी को बुना है। थैले की दोनों बहने बेहद खुबसूरत थीं। इसका जिक्र किसीने फौजी अफसरों से कर दिया। बलवे में एक मेम मिस शेरवुड मारी गई थी। बदला लेने के लिए ऊपर से इलाके के थानेदार को ऑर्डर दिया गया और उन्हें बुलाया गया। थैले को मरे सिर्फ दो दिन हुए थे कि यह हाजिरी का हुक्म सादर हुआ। हमसफर के जरिए यहाँ विरोधाभास पैदा किया गया है। हमसफर के निराश लब्जोंद्वारा उनके वहाँ जानेकी तथा बगावत करने पर इन्हें गोलियों से उड़ा देने की कहानी कही गई है, लेकिन उसीके लब्जोंद्वारा कहा गया है, ''उन्होंने अपने शहीद भाई के नाम पर वट्टा लगा दिया।''[7] यहाँ एक अजीब किस्म का विरोधाभास पैदा होता है। विवशता, मानसिक आक्रोश, क्रोध तथा दर्द कहानी के अंत में पनपता दिखाई देता है।

स्वराज्य के लिए

मंटो ने यहाँ शहजादा गुलाम अली के शख्सीयत को रेखांकित किया है। कहानीद्वारा यह बताया गया है, कि एक हद तक सभी नियमों के तथा बंधनों के तहत इंसान रह सकता है लेकिन उसमें कितना भी जुनून हो, उसमें अपने निर्धार पर अड़े रहने की कितनी भी काबिलत हो वह प्रवृतिनियमों के विरोध में नहीं जा सकता, प्रकृतिगत नियमों को वह ठुकरा नहीं सकता, उसे छोड़ जीना, जो जिंदगी में सहजही आई हुई मूलभूत आवश्यकता होती है, जीना बिल्कुल बेकार हो जाता है।

इस कहानी में मंटो की जीवन-दृष्टि और सौन्दर्य-बोध महात्मा बांधी की जीवन-दृष्टि और नैतिकता-बोध के ठीक विरोध में है। कहानी में एक स्थलपर वे लिखते हैं, ''झोंपड़ी में रहना, आराम के बदले सख्त काम करना, खुदा की तारीफ गाना, कौमी नारे लगाना - यह सब ठीक है पर यह क्या कि इन्सान के उस कुदरती जज्बे को, जिसे सौन्दर्य प्रेम कहते हैं, आहिस्ता-आहिस्ता मुर्दा कर दिया जाए। वह इंसान क्या जिसमें खुबसूरती और हंगामों की तड़प न रहे। ऐसे आश्रमों, मदरसों, विद्यालयों और मुलियों के खेत में क्या फर्क है?''[8] इस कहानी में आजादी की लड़ाई के दिनों के मार्मिक ब्योरों को गुलाम अली और निगार मे संबंधों के साथ बड़ी कलात्मकता से विन्यस्त किया गया है।

मंटो की तलाश, दरअसल, लुप्त होती इंसानियत की तलाश है। यही वजह है कि 'फितरत के खिलाफ' जो कुछ होता है, उसे मंटो एक लानत समझते हैं। जो भी जीज इंसान की स्वाभाविक और प्रावृतिक अच्छाई पर आधात करती है, वे उसके खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते हैं।

समाज और व्यक्ति के आपसी रिश्तों, उनके परस्पर टकराव का यहाँ सूक्ष्म चित्रण है। अपनी सारी समाज-परकता और सोद्देश्यता के बावजूद, मंटो 'व्यक्ति' के सबसे बड़े हिमायती हैं। जहाँ वे, व्यक्ति के रुप में आदमी द्वारा समाज पर किए गए हस्तक्षेपों के प्रति गाफिल नहीं हैं, वहीं वे इन असहज दबावों के भी खिलाफ हैं, जो समाज की ओर से व्यक्ति को सहने पड़ते हैं। समाज द्वारा व्यक्ति की आजादी के मूल अधिकारों के हनन को मंटो एक जुर्म समझते हैं; उसी तरह, जैसे व्यक्ति द्वारा जनता के शोषण को।

मंटो ने इस कहानी में अपनी बहुत सी मान्यताओं को एकाग्र रूप में अभिव्यक्त किया है। कहानी, महात्मा गांधी और उनके आंदोलन को पृष्ठ-भूमि में लेकर चलती है और उन आदर्शो की व्यर्थता सिद्ध करती है, जो यथार्थ पर आधारित नहीं होते या जो किसी खास व्यक्ति के सच होते हैं। मंटो ने इस कहानी में प्रकारान्तर से यह स्वीकार तो किया है कि आदर्श, जहाँ तक कि वे मनुष्य की प्राकृतिक अच्छाई को बढ़ाने में योग दें - प्रशंसनीय हैं; लेकिन वे उनका अंधानुकरण करने के सख्त खिलाफ हैं।

लेकिन 'स्वराज्य के लिए' सिर्फ गांधीवाद पर बस नहीं करती, वरन उसे प्रतीक-रुप में लेकर, वह उन सारे वादोंपर भी चोट करती है, जो आदमी को नेक काम करने के लिए मदारी का चोला पहना देना चाहते हैं। किसी भी महत् उद्देश्य को हासिल करने के लिए यह जरुरी नहीं कि आदमी अपनी इंसानियत तज कर, करिश्मेबाजी पर उतर आये-जैसा कि

'स्वराज्य के लिए' के बाबा जी करते हैं। एक व्यक्ति, जब अपने व्यक्तित्व द्वारा, समूह को भेड-बकरियाँ बनने के लिए प्रेरित करता है तो मंटो उसे इंसान की स्वभावगत अच्छाई और आजादी का अपमान समझते हैं। प्राय: सभी देशों में, जहाँ जनता धार्मिक अंध-विश्वासों में जकडी हुई है, राजनीति किस प्रकार धर्म के माध्यम से व्यक्ति की सामाजिकता पर अपनी बदनुमा छाप छोड़ती है और व्यक्ति को गैर-ईमानदार होने पर मजबूर करती है - यह भी मंटो ने, 'स्वराज्य के लिए' के माध्यम से, अभिव्यक्त करना चाहा है। इसीलिए यह कहानी उस युग की सच्ची तस्वीर ही नहीं है, जिसे मंटो ने देखा था, वरन उसकी कटुतम आलोचना भी है, क्यों कि उन सारे आदर्शों की तह में एक ऐसी घिनौनी सौदेबाजी काम कर रही थी - जिससे, बकौल मंटो, सारा आंदोलन ठंड़ी लस्सी में बदल गया।

एक खत

इस कहानी में मंटो ने खुद के अंतरंग के पहलूओं को खोलकर सामने रखा है। उनके मित्रद्वारा एक खत पर सोच-विचार तथा अपने मन की बात इस कहानी में मंटो ने बताई है। मंटो के अंतरतम् की तमाम बुनियादे इस कहानी में रोशन हो जाती हैं। मंटो के अंतरात्मा की बातें उस खत के लब्जों को पढ़ते-पढ़ते ही उन्होंने बयान किए हैं। इस खत के जवाबी खुलासे द्वारा उन्होंने अपने मन की तमाम अवस्थाओं, पहलुओं तथा स्वभाव की गहराईयों को सामने रखा है। इस कहानीद्वारा उनकी दास्तान जो खुद में एक पहेली है साफ आईने की तरह चमकती दिखती है और उनके व्यक्तित्व की रंगछटाओं को आलोकित करती है।

दो कौमें

इस कहानी में हिंदू और मुसलमान दो मजहबों के लड़के और लड़की में जिनके नाम हैं मुख्तार और शारदा प्यार हो जाता है। उनके प्यार का किस्सा प्रस्तुत कहानी में आदि से अंत तक बड़े ही दिलचस्प ढ़ंग से गढ़ा गया है। हिंदू और मुसलमान दो परिवार पास-पड़ोस मे ही रहते हैं। मुख्तार जो मुसलमान है उसे हिंदू लड़की शारदा से प्यार हो जाता है। शारदा भी उसे प्यार करती है। दोनों का प्यार ऊँचाई तक पहुँच चुका हैं। लेकिन कहानी का अंतिम दौर कुछ अलग ही मोड़ लेता है। दोनों में संबंध बन चुके हैं तो शादी की बात छीड़ जाती है। मुख्तार शादी के लिए शारदा को मुसलमान बना देने की बात करता है लेकिन शारदा मुसलमान बनने को राजी नहीं, वह कहती है तुम हिंदू बन जाओ। मुख्यार हिंदू बनने के लिए राजी नहीं, उसकी राय में हिंदू मजहब कोई मजहब ही नहीं है, अपनी जगह वह ठीक भी हो लेकिन इस्लाम का मुकाबला नहीं कर सकता। इसी बात पर विवाद छिड़ जाता है। शारदा के दिल को इससे ठेंच पहुँचती है, वह उसे चले जाने को कहती है।

इस तरह मजहब की दीवार दो प्यार करनेवालों के बीच इस तरह पक्की गढ़ी हुई खड़ी थी कि उनके प्यार की ऊँचाई भी उसे लाँघ न सकी। 'दो कौमें' इस कहानी द्वारा किस हद तक कौम रास्ते में रुकावट बन खड़ी होती है, यह मंटो ने बताया है।

सवेरे जो कल मेरी आँख खुली

यह कहानी उस समय की है, जब हिंदुस्तान और पाकिस्तान का विभाजन हुआ था। विभाजन के बाद के स्वतंत्र पाकिस्तान के सबेरे का वर्णन लेखक ने किया है। उस सबेरे की बात ही कुछ और थी। हर जगह, हर चीज, हर दृश्य में 'पाकिस्तान जिंदाबाद !' के नारों की गुंज उन्हें सुनाई देती थी। वह माहौल जो अभी-अभी विभक्त होकर अपने नए अस्तित्व को नए अंदाज में तलाश रहा था, उसका वर्णन अपनी शैली में, अपनी अलग ढ़ंग में लेखक ने किया है। लगभग सभी वहीं का वहीं होनेपर भी उस वातावरण में सब कुछ नए ढ़ंग से, अपने नएपन को लेकर दिखाई दे रहा था।

विभाजन के बाद अपने मजहब या अपने स्वतंत्रता को लेकर अपने अस्तित्व की खोज करते माहौल में फैले नएपन तथा लोगों की मनोवृत्ति का दर्शन प्रस्तुत कहानी में लेखक ने किया है।

किर्चें और किर्चियाँ

यह कहानी भी बँटवारे से जुड़ी है। बँटवारे के प्रसंग ने मंटो को तहे दिल से हिला दिया था। उनपर उसका काफी प्रभाव बना हुआ था। विभाजन के समय से आज तक कश्मिर की समस्या बनी रही है। यह कहानी कश्मिर किसका है ? तथा उससे जुड़े प्रश्नोंपर ही आधारित है। खुद को कहानी में समाविष्ठ कर कुछ अलग ढ़ंग से अपने जजबाती तौर पर मंटो ने कहानी कही है और कश्मिर के संबंध में लोगों के विचार को अपनी लेखनी द्वारा गड़कर प्रस्तुत किया है।

योमे-इस्तकलाल

जब हिंदुस्तान दो टुकड़ो में बँट गया तब सभी अपने-अपने मजहब तथा मुल्क के आजादी की खुशी में मशगूल थे। मंटो बंबई में रहते थे, वहाँ की कई जगहे भी बँट गई थी, एक पाकिस्तान की तरफ और दूसरे हिंदूस्तान की। उस माहौल के परिवर्तन को तथा उसमें बिताई कई किस्सों को इस कहानी में पेश किया है। दो मुल्क जो अपने नएपन, तथा स्वतंत्र अस्तित्व को लेकर ताजा-ताजा ही खिले हुए थे, उनके अपने नए कायदे-कानून अपने ढ़ंग से

बुने हुए थे। वातावरण में विभाजन के बाद हुए इस विचित्र परिवर्तन को लेखक ने इस कहानी द्वारा सामने रखा है।

नारा

केशवलाल जो अपोलो बंदर पर नमक-लगी मूँगफली बेचता था। अपने मकान मालिक को दो महिने का किराया देनेवाला था। मजबूरी और अभिमान के द्वंद्व में फसे एक लाचार आम आदमी की तड़फड़ाहट और मानसिक बेचैनी को इस कहानी मे प्रस्तुत किया है। केशवलाल उस सेठ के पास अपनी मजबूरी बताकर एक महिने की मोहलत माँगने गया था। इसलिए विवशता से उसने अपने गरुर को अंदर की अंदर दबा लिया था। लेकिन सेठ ने जब उसकी एक न सुनी और उसे गालियाँ दीं तब उसके अभिमान को ठेंच पहुँची और यह जिल्लत वह बर्दाश्त नहीं कर पाया। वह उसके आगे तो कुछ कह नहीं सकता था। लेकिन सेठ ने दी हुईं गालियाँ उसका पिछा नहीं छोड़ती थी और यह गालियाँ उसके मन में बसे अहं को झकझोर रही थीं। वह उसी क्रोध में पनप रहा था। उसकी मानसिक स्थिति का सही वर्णन मंटो ने किया है। मानसिक उलथपुथल का मनोवैज्ञानिक चित्रण यहाँ हुआ है। वह चाहता तो सेठ को चीत कर सकता था पर वह ऐसा नहीं कर सकता था, वह मजबूर था। उसकी यही विवशता उसे अंदर ही अंदर खा रही थी, उसके अंदर आग लगी हुई थी। मन में मच रहे खौलते तूफान को लेकर वह अपोलो बंदर - गेट वे ऑफ इंडिया के सामने एक आलीशान होटल के नीचे खड़ा हो गया, उसने ऊपर देखा। पत्थर की इमारत की तरफ, जिसके रोशन कमरे चमक रहे थे और उसके गले से गालीरूपी कानों के पर्दे फाड़ देने वाला, पिघले हुए गर्म-गर्म लावे की तरह नारा निकला।

एक मजबूर की मजबूरी और उसके अंदर मचलते कोलाहल, उसके गरुर को अभिमान को, ठेंच लगने के कारण अंदर लगी आग को सही शब्दों में व्यक्त किया है।

सड़क के किनारे

औरत मर्द के चंगुल में फसकर उसका शिकार हो जाती है, मर्द अपनी पूर्णता पाकर औरत को उन्हीं हालातों में छोड़ जाता है और औरत विवश होकर रह जाती है। मर्द के धोखा देनेपर भी उस नाजायज संबंध से औरत के अंदर पनपते उसके वजूद को वह मिटाती नहीं, उसे जुदा नहीं करना चाहती, उसे जिंदगी देना चाहती है, लेकिन जमाना तो कुछ और ही चाहता है, जमाने के नजरिये से यह नाजायज संबंध की पैदाईश है और जमाना उसे मंजूर नहीं करता। फिर आइ दिन अखबार में ढेरों खबरें आती हैं कि किसी सड़क के किनारे किसी

नवजात शिशु को मरे हुए हालत में पुलिस ने पाया। इसी विषय को लेकर, इस असाधारण सामाजिक समस्या को लेकर मंटो ने कहानी लिखी है।

पूरी कहानी इतनी कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत हुई है कि उसका प्रभाव दिल में गहराई तक चोट कर जाता है। औरत मर्द पर विश्वास रखती है, वह धोखा देके चला जाता है, इस रिश्ते के फल से निर्माण होनेवाले बच्चे को वह अपने पेट में पालती है। इन स्थितियों से गुजरते हुए उसकी मानसिक-स्थिति दर्दनाक बन जाती है। फिर भी वह उसे पैदा करती है, लेकिन वह लावारिस शिशु बनके किसी सड़क के किनारे पाया जाता है। इसके लिए जिम्मेदार कौन है ? वह मर्द, औरत या फिर जमाना। इस कटु सामाजिक समस्या को सामने रखने का प्रयास इस कहानी में लेखक ने किया है।

नया कानून

कुर्बानी रंग लाई और मुल्क आजाद हुआ तो मंटो को हम कहानी 'नया कानून' के मंगू कोचवान में पाते हैं। मंगू कोचवान है और कोचवान को जैसा होना चाहिए, वैसा ही है। मंगू लाहौर में सैनिक छावनी, माल रोड़ जैसे इलाकों में तांगा चलाता है। अंग्रेजी सिपाहियों को भी तांगे में बिठाता है। छावनी के गोरे उसे सताया करते थे। वे पैसे को लेकर खिचखिच करते, गाली-गलौज करते। तिस पर गोरे भारत के शासक थे। इसलिए मंगू को गोरों से नफरत थी। आजादी आई, नया कानून लागू होने की बात मंगू ने सुनी। नया कानून-आजाद मुल्क का कानून।

एक अप्रैल से नया कानून (इंडिया एक्ट) लागू होगा। मंगू को इस दिन का बेकरारी से इंतजार था। उसके लिए नया कानून का अर्थ है - मेरा कानून। आम लोगों का कानून। उसे लागू करने वाला भी मंगू ! एक गोरा जिससे मंगू की पिछली बार झिकझिक हो चुकी थी, दीखता है तो मंगू उसे तांगे में बिठाता है। अनापशनाप किराया माँगता है, गोरे के ऐतराज करने पर चाबुक से पीटने लगता है। पीटते-पीटते मंगू कहता जाता है - ''पहली अप्रिल को भी वही अकडफूँ ..... पहली अकड़फूँ को भी वही अकड़फूँ - अब हमारा राज है बच्चा।''[9] इस क्रोधित मंगू, गोरे को पीटने वाले मंगू के भीतर मंटो का गुस्सा है। मंगू गोरे को पीट तो देता है पर यह दीगर बात हैं कि सिपाही उसे खाने ले जाते हैं। रास्ते में मंगू 'नया कानून! नया कानून !' चिल्लाता रहता है। मंगू हवालात में बंद हो जाता है। मंगू मानसिक झटके से पागल हो जाता है। बहुत गाढ़े रंग के सपने जब टूटते हैं तो ऐसा अवसाद पैदा होता है कि इंसान पागल हो जाता है।

इस कहानी में मंगू कोचवान के जरिए लेखक ने आजादी की लड़ाई के दिनों की आम आदमी की मानसिकता और उसकी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त किया है। नए कानून के इंतजार के साथ-साथ वह आजादी के सपने देखता है और अंग्रेजों के प्रति उसकी नफरत और भी तीव्र हो जाती है। पूरे परिवेश में परिवर्तन देखने की उसकी आकांक्षा और परिवेश का हू-ब-हू वैसा, पूर्ववत बने रहना, नए कानून के बारे में उसका उत्साह और कानून में, असल में वही पुराना ढ़र्रा बने रहना स्थिति की विडम्बना के साथ-साथ चरित्र की विडम्बना को भी उघाड़ देते हैं। स्थितियों की विडम्बना को पकड़ने, आक्रोश को झलकाने और तेज व्यंग्य करने की मंटो की विशेषताएँ इस कहानी को महत्वपूर्ण बना देती हैं।

हतक

नीलाभ ने इस कहानी के बारे में कहा है, ''मंटो की कहानी में अनुभव की सच्चाई है और जुल्म के एहसास की प्रेरणा भी। इसलिए मैं 'हतक' को वेश्याओं की जिन्दगी पर किसी भारतीय कथाकार द्वारा लिखि गयी कहानियों की पहली पंक्ति में रखना चाहूँगा।''[10]

यह कहानी वेश्या-जीवन पर आधारित है। एक वेश्या-सौगंधी का जीवनपट यहाँ प्रस्तुत किया गया है। माधो उसे झूठमूठ का प्यार दिखाता है और वह प्यार की प्यासी उसमें फसकर उसके आर्थिक शोषण का शिकार बन जाती है। इतना ही नहीं उसकी सहज मानवीयता और स्वभावगत अच्छाई और मजबूरी का भी फायदा वह उठाता है।

एक वेश्या की जिन्दगी, उसका घर, उसके आसपास का माहौल, रहन-सहन आदि को, सुगंधी को केंद्रित कर मंटो ने चित्रित किया है। उसकी जिंदगी के अनेक सूक्ष्मतम पहलूओं को पकड़कर अपने लेखनी द्वारा कहानी में समेट लिया है। इसमें मंटो के दृष्टिकोण की लगभग सभी विशेषताएँ हैं - आक्रोश, दर्द और अपार मानवीयता।

कहानी में एक ग्राहक द्वारा नापसंद कर देने बाद सुगंधी का दिल टूट जाता है और आक्रोश फूट पड़ता है। सुगंधी इसे सह नहीं पाती। वह उस क्रोध में जलती रहती है, लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती क्योंकि वह मजबूर है। वह सेठ से अपने अपमान का बदला नहीं ले पाती, इसलिए उसका सारा गुस्सा माधो पर उतरता है। सेठ और माधो-दोनों उस पूँजीवादी सभ्यता के प्रतीक हैं और इसलिए माधो के प्रति सुगंधी के मन में जो गुस्सा है - और जो दरअसल मंटो के अंदर का आक्रोश है - वह 'हतक' के द्वारा उस सारी व्यवस्था के मुँह पर जैसे एक जन्नाटे का तमाचा जड़ता है, जिस व्यवस्था में एक वर्ग ऐसी जलालत बरदाश्त करने के लिए मजबूर है।

लेकिन मंटो को यह मालूम है कि जब तक मौजूदा निजाम में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक सुगंधी की स्थिति में कोई अंतर नहीं आएगा और कहानी की अंतिम पंक्तियाँ सुगंधी के अंदर के उस भयावह शून्य को पूरी तरह उजागर कर देती हैं।

खुशिया

यह कहानी एक औरत और मर्द के बीच की है जो एक ही धंदे में हैं। कांता जो एक वेश्या है और खुशिया एक वेश्याओं का दलाल । इस धंदे में अक्सर दलालों और वेश्याओं का संबंध आ जाता है। इस कहानी में एक मर्द को उसकी सोच में एक वेश्या-औरत द्वारा उसके मर्दानगी को चुनौती दी गई है, मर्दानगी पर शक किया गया है। इससे वह बौखला उठता है और बदले की भावना से उस वेश्यापर बरस पड़ता है।

एक औरत फिर वह वेश्याही क्यूँ न हो एक मर्द जब सामने आता है तो खुलेआम नंगी होके सामने नहीं आती - वह परदे में रहती है। लेकिन यहाँ कांता खुशिया के सामने उसे शायद एक मर्द न समझ एक दलाल समझकर उसके सामने नंगी आ जाती है। इस घटना से वह सोच में पड़ जाता है और उसके दिल में शक पैदा होता है, 'उसने ऐसा क्यूँ किया? क्या वह उसे मर्द नहीं समझती।' इसी सोच-विचार के उथल-पुथल में वह काफी देर डूब जाता है और उसके मन में बदले की भावना जागृत हो उठती है। इसी भावना के साथ वह उसे किराए पर अपनी मर्दानगी दिखाने ले जाता है। इस घटना का असर उसके दिलो-दिमाग में इस तरह बैठ जाता है कि वह अपना दलाली का पेशा ही छोड़ देता है।

काली सलवार

मंटो ऐसे कहानीकार है, जो उन्होंने जिया वही अपने कहानियों में प्रस्तुत किया। प्रस्तुत कहानी भी उनकी अनुभूति है।

यह भी मंटो की एक वेश्या जीवन पर आधारित कहानी है। दिल्ली आने से पहले सुल्ताना जो एक वेश्या है, अंबाला छावणी में उसका धंदा अच्छा चल रहा था। सुल्ताना खुदाबख्श को पसंद करती थी, चुनांचे दोनों का संबंध हो गया। खुदाबख्श के आने से एकदम सुल्ताना का करोबार चमक उठा और उसके इस अंधविश्वास से कि उसके आनेपर उसकी तरक्की हो गई, खुदाबख्श का महत्व उसकी दृष्टिमे बढ़ा दिया। उसके कहने पर ही वह दिल्ली चली आई। लेकिन दिल्ली में जाने के बाद उसका धंदा धिमा हो गया। धंदा न होनेपर आर्थिक समस्याओं से उसे गुजरना पड़ता था। वह ढ़ेर घंटोतक अपने दिमाग में कई बेमतलब खयालों में खोकर रह जाती थी। खुदाबख्श मेहनती था लेकिन अब उन दिनों में वह देर तक

फकीर के चक्कर में घर से बाहर रहता था और आर्थिक हालात कमजोर हो गए थे। इन्हीं दिनों मे शंकर से उसकी मुलाकात हो जाती है और संबंध बन जाते हैं। मुहर्रम आ रहा था और सुल्ताना को एक काली सलवार बनानी थी। अनवरी जो उसकी पड़ोसन थी उसके साथ भी शंकर के संबंध थे। अनवरी को बुन्दे चाहिए थीं, जो सुल्ताना के पास थीं और सुल्ताना को काली सलवार चाहिए थी जो अनवरी के पास थी। शंकर के जरिए काली सलवार सुल्ताना को मिल जाती है जो अनवरी की थी और अनवरी को बुंदे मिल जाती हैं जो सुल्ताना की थीं। इस तरह संबंधों की सीवल उघड़ती चलती है और स्थिति की विसंगति और विंडम्बना उजागर होती जाती है। मंटो ने चरित्रों के मनोविज्ञान को कुशलता से निरूपित किया है। एक ओर सेक्स और मनोविज्ञान के धरातल पर, दूसरी ओर नैतिकता से जुड़े प्रश्नों के बीच रखकर मानव मन की परतों को उघाड़ना इस कहानी की बहुत बड़ी विशेषता है।

डरपोक

इस पूरी कहानी में एक शख्स - जावेद जो पढ़ा-लिखा होशमंद आदमी है जिसे औरत में दिलचस्पी है, बार-बार वेश्यागमन का इरादा करता है लेकिन उसकी घबराहट उसके रास्ते में दीवार बन खड़ी है जो लालटेन के प्रतिक से दिखाई गई है। कहानी में लालटेन के द्वारा उसकी डरपोकता पर प्रकाश ड़ाला गया है। कोठे तक का रास्ता तय करते-करते किस कदर वह डरपोकता से घिरा हुआ है यही वर्णित हुआ है।

माई जीवाँ के चकले पर पहुँचते ही उसने जो दृश्य देखा वहाँ की हरकते देखीं तो जावेद के इरादे झड़ गए। वह वहाँ से भाग गया। कहानी के अंत मे बताया गया है कि वह निश्चय ही डरपोक था लेकिन इसी डरपोकता के कारण वह एक बहुत बड़े पाप से बचा था।

कहानी में चकले जैसे ठिकानों की डरावनी स्थिति दर्शाई है और जावेद जैसे किरदार के जरिए उस माहौल को दिखाया है जिससे डरावनी मानसिकता पैदा होती है और एक सीख भी मिलती है कि इस कदर डर पैदा होनेवाले डरावने माहौल में जाना चाहिए या नहीं।

सौ कैण्डल पावर का बल्ब

लेखक कैसर पार्क में गया हुआ था लेकिन दो वर्ष पहले उसकी जो रंगत थी वह उड़ चुकी थी। विभाजन के समय के तुफानी हादसे से हालात बुरे थे। दो वर्ष पहले वहाँ सभी ऐश के साधन होने के कारण अपने दोस्तों के साथ बड़े ऐश किए थे। मगर दो वर्ष के बाद अब जब वह वहाँ था माहौल कुछ खराब था उसमें चमक नहीं थी।

जब वह अपने दोस्त के इंतजार में खड़ा था तब एक दलाल उसे एक जगह ले गया। एक अधबने इमारत के सीढ़ियों में उसे ठहराकर वह सीढ़ियों के अंत की तरफ चला गया जहाँ लेखक को तेज रोशनी दिखी। दलाल एक औरत से बाते कर रहा था। वह थक चुकी थी, जाने के लिए मना कर रही थी, उसे नींद आई हुई थी इतनी तेज रोशनी में भी वह सो रही थी। मगर जैसे-तैसे दलाल के कहनेपर वह तैयार हुई। फिर व्यवहार तय हुआ और वह औरत उसके साथ चलने पड़ी। वह उसे एक होटल में ले जाता है और उसकी हालत पर हमदर्दी प्रकट करता है, लेकिन वह इतनी तंग आ चुकी थी कि उसे हमदर्दी भी बर्दाश्त नहीं होती। हमदर्दी दिखानेपर भी वह बारबार गुस्सा होती थी। वह उसे वैसे ही छोड़ आता है।

जब यह हकीकत वह उसके दोस्त को बताता है तब वह भी वहाँ जाता है और देखता है कि औरत ने उस आदमी को मारा था और खुद सो रही थी। यह दृश्य देखने के बाद वह जल्दी से लौटकर मुश्किल से अपने घर पहुँचता और सारी रात डरावने सपने देखता रहता है।

प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट जाहीर हो जाता है, दलाल किस तरह औरत का इस्तमाल करते हैं, कितने जुल्म उसपे डालते हैं और औरत किस हद तक मजबूरी में उनकी शिकार हो जाती है। बर्दाश्त की हद समाप्त होने पर वह खून भी करने के लिए विवश हो जाती है। व्यवस्था की बहुत बड़ी कडवाहट अपना नंगा रूप लिए सामने आ जाती है।

हारता चला गया

इस कहानी में एक ऐसा आदमी है, कामयाबी जिसके चरण छुती है मगर उसे जीत कर हराने में खुशी होती है। उसने अपने जिंदगी में बहुत धन हासिल किया था। वह हारने के लिए जुआघर जाता था। फारस रोड़ के जुआघर में वह जब जाता तब टैक्सी रूकने के बाद वहाँ एक बदसूरत औरत जो वेश्या थी उसे दिखाई देती थी जो सिंगार में मशरूफ रहती थी। उसने उसके पास जाकर पूछ ताछ की और उसे हर रोज दस रूपये देने का वायदा किया मगर इस शर्त पर कि जब वह वहाँ आए तो रूपये लेने के बाद वह अंदर सोया करे, उसे बत्ती जलती दिखाई न दे। वह मान गई और खुश हो गई। लेकिन कुछ ही दिनों में उसने देखा कि फिरसे उसने दुकान खोली है और बत्ती जल रही है। वह वहाँ पहुँचकर उससे सवाल करता है, वादा तोडने की बात करता है लेकिन गंगूबाई उसे सार्थक शब्दों मे कहती है, कितनी ही बत्तियाँ यहाँ जल रही हैं, तुमने एक की बत्ती दस रूपये देकर बुझा दी लेकिन क्या तुम ये सब बत्तीयाँ बुझा सकते हो? और इसपर उसके पास कोई जवाब नहीं था। तब उसे एहसास हो जाता है कि उसकी जेब की तरह उसका दिल भी खाली है।

इस कहानी में समाज - व्यवस्था तथा हालात के प्रति व्यंग्य कसा गया है।

14906

मैडम डीकॉस्टा

मैडम डीकॉस्टा लगभग चालीस-बयालीस उम्र की औरत थी जो 'मैं' की पड़ोसन थी। उसके व्यक्तित्व को तथा स्वभाव को कहानी में व्यक्त किया गया है। गर्भ और बच्चा पैदा होने की विद्या को वह बहुत अच्छी तरह जानती थी, वह खुद आधे दर्जन बच्चे पैदा कर चुकी थी। जिनमें से पाँच जिंदा थे। उस बात में वह दुसरों का भी बहुत खयाल रखती थी खासकर की उसकी पड़ोसन 'मैं' का क्योंकि उसे भी नौ महिने पुरे हो चुके थे। वह हमेशा उसकी पूछताछ करती रहती थी।

मैडम डीकॉस्टा आसपास की बहुत सी जानकारी रखती थी। उसे 'मैं' का बच्चा पैदा होने की बहुत फिक्र थी। इंतजार करके एक दिन वह उसे अपने घर में ले गई। वहाँ उसकी हरकतों से 'मैं' घबरा गई। लेकिन थोडी ही देर में उसकी घबराहट खत्म हो गई। खोबरे का तेल उसके पेटपर डालकर वह देखना चाहती थी कि बच्चा कब पैदा होगा और उसने कह भी दिया। और उसके कहने के मुताबिक डेट में कुछ फर्क छोड़कर बच्चा पैदा हुआ और वह लड़का ही था।

महमूदा

मुस्तकीम ने महमूदा को पहली बार अपनी शादी में देखा था। वह उससे कुछ प्रभावित था। उसकी आँखे बड़ी-बड़ी थीं। मुस्तकीम की बीवी कुलसुम की वह सहेली थी। उन्हें पता चलता है कि उसकी शादी हो चुकी है। और उन्हें यह भी खबर लगती है कि उसके बुरे दिन निकल रह है क्योंकि उसका खाविंद मौलवी हो गया था। फिर बाद में यह भी खबर उन्हें लगती है कि वह ढोंग कर रहा है। असल में वह औरत के काबिल नहीं इसलिए फकीरों और संन्यासियों से टोने-टोटके लेते फिरता है। फिर आगे जमील की बेपरवाही के कारण गरीब महमूदा बुरी बातों पर मजबूर हो जाती है। उसके यहाँ गैर मर्दों का आना-जाना होता है। वह पाप के मार्ग पर अग्रसर हो चुकी थी। मुस्तकीम चाहता था उसे रोके लेकिन वह अपनी बीवी का दबेल था। उसके दिल में उसके लिए हमदर्दी थी लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था। मुस्तकीम को बड़ा अफसोस होता है कि वह उसे क्यों इस पाप के मार्ग से रोक न सका? लेकिन अब वक्त बीत चुका था। आगे जाकर जब वह दोनों कराची जाते हैं तब मुस्तकीम को वहाँ महमूदा पान की दूकान पर नजर आती है। उस नजरिए को देखते ही मुस्तकीम के होशोहवास गायब हो जाते है।

यहाँ एक मजबूर औरत की मजबूरी को दिखाया गया है जो जीवन व्यतित करने के लिए पाप के रास्ते में अनायास ही आ जाती है और कई लोगों की उससे हमदर्दी होने के बावजूद वह उसके लिए कुछ नहीं कर पाते।

शिकारी औरतें

यहाँ मंटो अपने जीवन में आई हुईं शिकारी औरतों के अनुभव को प्रकट करते हैं। कुछ औरतें ऐसी भी होती है जो फरेब में माहिर होती है। फिर वो किसी आसरे की तलाश ही क्यों न हो या फिर मजबूरी। लेकिन वो फसाना चाहती हैं उनके चंगुल में। और अकसर कई लोग इनके चंगुल में फस भी जाते हैं। बम्बई तथा लाहौर के कुल तीन किस्सों को मंटो ने यहाँ बयान किया है। कई औरतें अपनी शिकार की खोज में होती हैं। औरत की इस शिकारी वृत्ती का दर्शन हमें इसमें मिलता है।

दूदा पहलवान

सलाहों सुंदर और खुबसूरत होने के साथ-साथ मालदार घराने की आँखों का नूर भी था। इसलिए उसको किसी चीज की कमी नहीं थी। उसको एक संरक्षक की जरूरत थी और उसने बदमिजाज और अक्खड़ तबीयत के गरीब दूदा पहलवान को पसंद किया और उनमें दोस्ती हो गई। दूदा पहलवान उम्र में सलाहो से दुगुना बड़ा था। इस दोस्तीसे सलाहो को बहुत फायदे हुए। बाप मरने के कारण सलाहो अपनी तमाम जायदाद का मालिक बन गया। पहले तो उसने नकदी पर ही हाथ साफ किया फिर मकान गिरवी रखने शुरू कर दिए। वह वेश्यागमन की तरफ झुक गया था। दूदा पहलवान को सलाहो से बहुत स्नेह था। वह उसका गुलाम था। सलाहो खूब ऐश करता था लेकिन ऐसी ऐश में दूदा को कोई दिलचस्पी नहीं थी वह ऐसी दुनिया से दूर रहता था। सलाहो गलत रास्ते भटक रहा था लेकिन दूदा उसका वफादार नौकर था और वह उसका बहुत ख्याल रखता था।

दूदा का दामन औरत की तमाम वासनाओं से पाक था। कई बार कोशिश की गई कि वह गुमराह हो जाए मगर नाकामी हुई। वह अपनी बात पर दृढ़ रहा। सलाहो ऐश-व-इशरत में पहले की तरह गर्क था कि कश्मीर से एक वेश्या अल्मास आई जो बेहद खुबसूरत थी और अधेड़ उम्र की माँ के साथ आई थी, उसपर उसका दिल आ गया। वह उसे पाना चाहता था। सलाहो के पास अब इतनी दौलत नहीं थी तब दूदा ने तरकीब निकाली कि सलाहो अल्मास की माँ इकबाल से संबंध पैदा करे और मौका मिले तो अल्मास को अपने कब्जे में कर ले। तरकीब पर अमल करना शुरू हो गया। लेकिन सच्चाई ज्यादा देर छुप न सकी आखिर वह सामने आ ही गयी। दो मकान बेचकर पच्चीस हजार रूपये लाए थे मगर वो भी अल्मास की चाल में ठिकाने लग गए। अब दस हजार रूपये उस मकान को गिरवी रखकर उजाड रहा था जिसमें उसकी नेकचलन माँ रहती थी। यह रूपया कब तक उसका साथ देता। इकबाल और अल्मास दोनों जोंक की तरह चिमटी हुई थीं। आखिर वह दिन भी आ गया। जब उसपर

नालिश हुई और अदालत ने कुर्की का हुक्म दे दिया। दूदा कहीं से दस हजार रूपये ले आया। वह भी लेके सलाहो अल्मास के कोठे की तरफ जाने लगा। मगर दूदा ने उसे समझाया कि पैसे कुर्की वालों को दे दे। वह नहीं मानता था पर दूदा ने समझाया अब अल्मास के पास जाने का कोई फायदा नहीं क्योंकि ये रूपये उसीने उसको दिए थे। अल्मास उस पर बहुत देर से मरती थी, लेकिन वह उसके हाथ नहीं आता था। जब सलाहो पर तकलीफ का वक्त आ गया तो उसने अपनी कसम तोड़कर कुर्बानी दी। उसने अल्मास से सौदा कर लिया था और ये पैसे वहाँ से लाए थे।

किस कदर एक नेक इंसान गुलाम बनकर किसी के लिए अपने आपको लुटाकर भी साथ निभाता है, इसका एक जबरदस्त उदाहरण प्रस्तुत कहानी में मिलता है।

मेरा नाम राधा है

इस कहानी में मंटो ने अपनी फिल्मी दुनिया के दौरान आई हुई यादें लिखी हैं और उनमें आए हुए कुछ चरित्रों पर प्रकाश डाला है। यह कहानी मुख्य रूप से राजकिशोर जो एक एक्टर था और निलम जिसका असली नाम राधा है, लेकिन फिल्मी जगत में वह यह नाम इस्तमाल नहीं करना चाहती, जो एक एक्ट्रेस है इन दोनोंपर केंद्रित हैं। फिल्म के किस्से कहते-कहते इन दोनों के चरित्र तथा दोनों के संबंध कहानी में आते हैं। खुद मंटो वहाँ मौजूद होने के कारण उनके सामने, घटी हुई घटनाओं को जो उन्होंने बहुत ही नजदीकी से और गहराईसे देखे तथा महसूस किए थे कहानी में उनको उतारा है।

वैसे यह कहानी बहुत लंबी है तथा इसमें किस्से बुने गए हैं। राजकिशोर फिल्मी जगत का बड़ाही सद्चरित्र और मशहूर एक्टर है। नीलम एक वेश्या की पुत्री है। वह स्टूडियो के तमाम लोगों के नजरिए से साधारण ऐक्ट्रैस थी लेकिन विचित्र प्रकार के गुनों की खान थी। राजकिशोर और नीलम के संबंध में बातें छीड़ जाती है लेकिन राजकुमार उसे बहन मानता है। इस बातसे नीलम बौखला उठती है। वह एक दिन उसपर बरस पड़ती है, उसकी सारी वासनांध हरकतें बड़े ही खतरनाक रूप से राजकुमार पर चलती रहती हैं और वह उसे नोच डालती है। वह महसूस करती है कि हर चीज बनावटी है। वह मंटो के यहाँ आके किस्सा बताते हुए आखिर में अपने होश खो देती है और मंटो के जोर से 'नीलम' पुकारने के बाद वह कहती है कि उसका नाम राधा है। कहानी में फिल्मी जगत के मशहूर चरित्रों के पीछे छुपे बनावटी रहस्य को उजागर करने की कोशिश की है।

कई बार मंटो एक चरित्र को कई पात्रों के जरिए पेश करते हैं, उसके बारे में खुद कुछ नहीं कहते, कुछ संकेत देते चलते हैं जिससे उस चरित्र के 'रहस्य' को जानने की जिज्ञासा बनी रहती है। आमतौर पर एक व्यक्ति अच्छा या सच्चरित्र मान लिया जाता है और उसके आचरण के ब्योरे भी उसे पुष्ट करते-से लगते हैं तो भी लगता है उस चरित्र की पोल खुलेगी और पोल खुलती भी है लेकिन हमारी उम्मीदों को अक्सर झकझोरती हुई - चरित्र एक ऐसे बिंदु से पेश हो जाता है कि हतप्रभ हो जाना पड़ता है। यह ऐसी ही एक कहानी है जो राजकिशोर और नीलम के चरित्रों की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक वास्तविकता को कहानी के अंत में खोल देती है।

बाबू गोपीनाथ

बाबू गोपीनाथ प्रत्यक्षत: बहुत से विरोधाभासों का व्यक्तित्व है लेकिन लेखक ने उसकी सच्चाई को तराशकर इस तरह कहानी में सामने लाया है कि उसमें हमें इंसानियत की बुनियाद दिखती है। बाबू गोपीनाथ जीनत का बहुत खयाल करता है, जो उसकी रखैल है और वह उससे बहुत प्यार करता है। जीनत के आराम के लिए हर सामान हाजिर है लेकिन दोनों में अजीब-सा खिंचाव भी है। बाबू गोपीनाथ को फकीरों और कंजरों की संगति का शौक है। उसने सोच रखा है कि जब दौलत खत्म हो जाएगी तो किसी फकीर के तकिए में जा बैठेगा। रंडी का कोठा और पीर का मजार, बस दो जगहें हैं जहाँ उसके दिल को सुकुन मिलता है। क्यूँकि जीनत के भविष्य का उसे खयाल था जो निहायत भोली, सीधी-साधी थी और जिसके पास और रंडियों जैसे किसी को फँसानेवाले दाँवपेच नहीं थे। उसने कोशिश की कि उसे कोई मिल जाए और जिसकी रखैल बन कर वह पूरी जिंदगी आराम से गुजार दे पर यह उससे नहीं हुआ। आखिर कई कोशिशों और मुश्किलों के बाद सरदार और सेण्डो की मदद से उसकी शादी तय हो जाती है। कहानी के आखिर के किस्से में जब उसकी शादी हो रही होती है जीनत के साथ की हुई मंटो की साधारण हरकत को एक बड़ा संगीन मजाक समझकर बाबू गोपीनाथ उनके प्रति भर्त्सना और दुख प्रकट करता है। इससे पता चलता है, बाबू गोपीनाथ जैसे भी पात्र है जो इस गंधे माहौल में रहकर भी अपनी इंसानियत की रोशनी लेकर चमक उठते हैं।

मम्मी

यह मंटो की बहुत लंबी कहानी है। इसमें अनेक घटनाओं के साथ बहुत से विभिन्न चरित्रों के पात्र गुंथे गए हैं। लेकिन कहानी घूमके एकही मध्यवर्ती चरित्र पे केंद्रित हो जाती है और वह पात्र है मम्मी जिसका नाम है मिसेज स्टेला। फिल्म कंपनी में काम के लिए मंटो पूना अक्सर आते थे जहाँ उनका एक मित्र चड्ढा रहता था। पूरी कहानी चड्ढा और उसे संभालनेवाली तथा उसकी मसीहा मम्मी के इर्दगीर्द घूमती रहती है।

चड्ढा, मम्मी और अपने बहुत से किस्से कहानी में मंटो ने बताए हैं। मम्मी, चड्ढा तथा सईदा काटेज में रहनेवाले रामसिंह, रंजिकुमार, गरीबनवाज, वनकतरे, शीरीं आदियों के चरित्रों के साथ मम्मी की उनपे किस कदर मेहरबानी थी यह कहानी में बताया गया है। चड्ढा का तो वह बहुत खयाल रखती थी, कई गंभीर समस्याओं में वह उसे संभालती है तथा चड्ढा भी उससे प्यार करता है। इन लोगों की खासकर चड्ढा की कई परेशानियाँ मम्मी दूर करती थी। हर छोटी-बड़ी बात के लिए वह मदद के लिए दौडती थी।

''हुकुमत को उसकी अदाएँ पसंद नहीं थीं - उसका रंग-ढंग पसंद नहीं था। उसके घर की महफिलें उसकी नजरों में आपत्तीजनक थीं। इसलिए कि पुलिस उससे प्यार और ममता को भ्रष्टाचार के रूप में लेना चाहती थी... वे उसे माँ कहकर उससे एक दलाल का काम लेना चाहते थे... एक अरसे से उसके एक केस की छानबीन हो रही थी। आखिर सरकार पुलिस की छानबीन से सहमत हो गई और उसको 'तडीपार' कर दिया। इस शहर से निकाल दिया... वह अगर वेश्या थी, दलाल थी - उसकी मौजूदगी अगर समाज के लिए हानिकारक थी तो उसका खात्मा कर देना चाहिए था... पूने की गंदगी से यह क्यों कहा गया कि तुम यहाँ से चली जाओ और जहाँ चाहो ढेर हो पडती हो?''[11] चड्ढा के इस बयान में व्यवस्था के प्रति प्रतिशोध दिखाई देता है। सही रास्ता दिखानेवाली उस गंदगी के साथ पवित्रता के जाने का चड्ढा को दुख होता है और उसकी आँखों में आँसू इस तरह तैरते रह जाते हैं जिस तरह कत्ल हुए लोगों की लाशें। इस तरह समाज में व्याप्त मम्मी जैसे चरित्रों को, जो गंदगी के साथ पवित्रता को लिए हुए हैं प्रकाश डाला गया है।

ब्लाउज

इस कहानी में एक पंद्रह-सोलह साल की उम्र से गुजरते हुए, अपनी यौवनावस्था पर कदम रखे हुए जिसमें सेक्स अंतर्भूत हो रहा है, जो बदलाव महसूस कर रहा है, एक अजीब किस्म की बेचैनी वह महसूस कर रहा है और जो इससे बिल्कुल अनजान है ऐसे लड़के की मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को पेश किया गया है।

डिप्टी साहब के घर में वह काम करता है। उसका नाम मोमिन है। वह बडा मेहनती लड़का था। घरवाले उससे खुश थें। घर में डिप्टी साहब के अलावा उनकी बीवी, दो लडकियाँ शकीला और रजिया थीं। शकीला ब्लाउज बना रही थी और इस काम में थोड़ा बहुत वह मोमिन का भी इस्तमाल कर रही थी। शकीला भी अपने यौवनावस्था में पहुँच चुकी थी। इस ब्लाउज बनाने की पूरी प्रक्रिया के दौरान मोमिन की मानसिक उथल-पुथल को

दिखाया गया है। उस ब्लाउज को छूनेसे उसमें सेक्स की हल्की तरंगे उमडती है। इसी उमडते सेक्स को मंटो ने शब्दोंद्वारा बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकट किया है।

ऊपर, नीचे और दरमियान

मंटो की इस कहानीपर भी अश्लीलता और नग्नता का आरोप लगाया गया था और उन्हें यौन-भावनाग्रस्त लेखक कहा गया था।

इस कहानी में मियाँ साहब और बेगम साहिबा, उनके डॉक्टर डॉ. जलाल और मिस सलढाना, उनके नौकर - नौकर और नौकरानी पात्रोंद्वारा भावनाओं को खोला गया है। मियाँ साहब और बेगम साहिबा की उम्र बीत चुकी है उनकी तबीयत अक्सर खराब रहती है लेकिन अब भी कामुकता उनकी नस-नस में बसी हुई है, जो मंटो ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक शब्दजाल से सामने रखी है। उनके डॉक्टर जो उनकी अवस्थापर तरसते हैं और ऐसे मरीजों को देखने से खुदके कैरेक्टर खराब होने की बातपर विचार करते हैं। नौकर और नौकरानी भी उनसे भलिभाँती वाकिफ हैं, उनकी बातचीत से भी उन दोनों के बीच के संबंध की थोडी-बहुत जानकारी जाहीर होती है। अब इस उम्र में भी अपने बेटे को जो 'लेडीज चैटरलीज लवर' पढता था उसे ना पढने की तथा डॉक्टर के सलाहपर उसे बर्ताव करने की समझ देकर खुद नाकारते हुए उसे पढ़ते हैं। इस कहानी में अजीब किस्म की कामुकता दिखाई गयी है जिसका असर उम्र बढनेपर भी कायम है और किन्हीं हालातों में वह पीछा नहीं छोड़ती।

धुआँ

यह भी मंटो की यौन-भावनाग्रस्त कहानी है जिसके उपर आरोप किए गए। यह कहानी मसऊद पर, जो स्कूल में पढ़ता है केंद्रित है। उसकी मानसिक अवस्थाओं को मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से कहानी में बुना गया है। प्रतिकों द्वारा मानसिकता को कहानी में गढ़ा गया है। वह स्कूल जाते वक्त बकरों के गोश्त से सफेद-सफेद धुआँ उठता देखता है और उसे राहत मिलती है। उस गोश्त के ईर्दगीर्द उसकी कई भावनाएँ कहानी में उमड़ी दिखती हैं। उसकी एक बहन है कुलसुम जो यौवनावस्था की चौखट पर है, उसे कमर, टाँगे दबाने को कहती है। इससे कुलसुम भी सुख महसूस करती है और मसऊद को भी मजा आता है। मसऊद अनजानी बातों से जिसका पता उसे नहीं, बेचैन हो जाता है। मसऊद जब अचानक उस कमरे का दवाजा खोलता हैं तब वहाँ उसे कुलसुम और उसकी सहेली विमला जो पास-पास लेटी थीं, विमला के ब्लाउज के बटन खुले हुए थे और कुलसुम उसके खुले सीने को घूर रही थी, यह दृश्य दिखाई देता है। मसऊद कुछ समझ नहीं पाता है और उसके दिमाग पर धुआँ सा छा जाता है।

प्रस्तुत कहानी मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से रची हुई है जहाँ मसऊद के यौनाकर्षण के अबूझ से शुरूआती दौर तथा समलैंगिक अनुभव को चित्रित किया गया है।

ढ़ाढ़स

इस कहानी में एक ॲबनॉर्मल इंसान भी किस कदर शराब के नशे में बहककर गंधा ढ़ाढ़स करने के लिए विवश हो जाता है, यह बताया है। यह कहानी मंटो ने अपने दोस्त असगरअली को लेकर लिखी है। मंटो के मित्र विश्वेश्वरनाथ की बारात, हिंदू सभा कालेज के सामनेवाले सुंदर विवाह-घर में ठहरी हुई थी। सभी दोस्त विस्की पिकर एक अलग कमरे में सोए हुए थे। चार बजे जब मंटो की आँख खुली तो अजगरअली को वहाँ उसने मौजूद न पाया। उसने सोचा वह शराब पीने के बाद बौखला जाता है, बैचेन हो जाता है, उसकी सूझ-बूझ गायब हो जाती है, वह रामबाग की किसी वेश्या के पास गया होगा। जब वे बाहर आये और उपर छतपर जाने लगे तब सीढ़ियों से उतरते हुए उन्हें असगर दिखा, वह बिना कुछ कहे पास से गुजर गया। मंटो ने सोचा उसने देखा नहीं। वह सीढ़ियाँ चढने लगे, तब आखिरी सीढ़ी पर शारदा को देखा जो उनकी परिचिता की बड़ी लड़की थी और विवाह के एक बरस बाद विधवा हो गई थी। वह वहाँ कुछ बुढ़ी औरतों की उसके बारे में दिल दुखानेवाली बातों से दुखी होकर आई थी। लेकिन असगर वहाँ पहुँच गया और उसने उससे बत्तमिजी की थी। उसने उसका दुपट्टा खींचा और कुर्ते के बटन खोलकर बत्तमिजी करनी चाही, विरोध करने पर होश में आकर वह वापिस लौटा था। एक विधवा स्त्री की ऐसे हालातों पर हुई मानसिक अवस्था को यहाँ मंटोने दिखाया है। मंटो ने उसको राहत दी और उसकी सांत्वना की। तब जाकर वह चुप हुई।

बू

इस कहानी में रणधीर एक भीगी हुई घाटन लड़की से शरीर-संबंध करता है। उस कामक्रीडा में उस घाटन के बदन से निकलती बू जिसका विश्लेषण वह नहीं कर सकता उसके नस-नस में समाती है। उस घाटन के अंग-अंग का, उसकी अदाओं का, उसके हुस्न का वर्णन वह कामक्रीड़ा मे लिप्त होते दौरान किया गया है। उस कामक्रीड़ा दौरान उस घाटन लड़की के बदन से निकलती बू उसे एक अजीब सुख दे रही थी।

उस शरीर सुख और उस बू का जो आनंद, सुख था वह उसे अपने साथ लेटी हुई गोरी-चिट्टी लड़की के जिस्म में और उसके बदन से निकले इत्र की खूशबू में भी नहीं मिला जो उसकी नई नवेली पत्नी, जो एक फर्स्ट क्लास मॅजिस्ट्रेट की बेटी थी, जिसने बी.ए. तक शिक्षा पाई थी और जो अपने कॉलेज के सैकड़ो दिलों की धड़कन थी, रणधीर की किसी भी

चेतना को न छू सकी जो चेतना उसे उस घाटन लड़की से मिली थी। वह हिना की खूशबू में उस बू को तलाशता रहता है जो उस घाटन लड़की के मैले बदन से आई थी।

कई प्रकृतिगत रहस्य या चिजें ऐसी होती हैं जिनकी तुलना किसी और से नहीं की जा सकती। उनकी अलगता अपने आप में पूर्ण रूप को लिए होती है। उसी प्रकार उस घाटन के बदन की 'बू' की तुलना और किसी 'बू' में नहीं हो सकती। उस घाटन की बदन के बू में जो आत्मानंद रणधीर को मिलता है वह उसे और कही नहीं मिलता। रणधीर 'पुरुष' है और घाटन 'प्रकृति' जो प्रत्यक्षत: निष्क्रिय है लेकिन पूरे इंसानी अस्तित्व को बाँहो में लिए हुए है और सुख व आनंद देने और लेनेवाली है।

चुगद

दोस्तों में लड़कों और लड़कियों के प्रेम की चर्चा चल रही थी। प्रकाश का मानना है कि प्रेम करने के लिए सोच-विचार करके स्कीम बनाने की जरूरत नहीं। उसके हिसाब से प्यार याने रोमांस है और यह करने के लिए जानवरों के जैसे तरीके इस्तेमाल करने चाहिए चूँकि बुनियादी तौर पर हम सब जानवर है। उसके लिए शराफत, शेरो-शायरी सब बेकार की बाते हैं। उसकी राय में मर्द चाहता है औरत को हसीन-से-हसीन रूप में देखे। औरत को आकर्षित करनेवाली इन बातों की पैदाइश की वजह औरत नहीं है, बल्कि औरत के बारे में, मर्द की हदसे बढ़ी हुई खुशफहमी है। उसकी सोचमें प्यार का इजहार करने तथा आगे बढ़ने में देरी नहीं करनी चाहिए, हर बात पर सोचविचार नहीं करना चाहिए, बस आगे बढ़कर उसे अपनाना चाहिए। इस संदर्भ में वह चौधरी का उदाहरण देता है। फिर इसी संदर्भ को समझाने के लिए वह अपना एक उदाहरण बताता है। जब वह कामसे गया था और वहाँ से आगेभी उसे कहीं काम के सिलसिले में जाना था लेकिन चंब्बा में ही वह तीन महीने तक रूका रहा क्यूँकि उसे वहाँ के एक हसीन लड़की से इश्क हुआ था। उसने पूरी कहानी सुनाई कि किस तरह वह तीन महीनों तक सोचविचार करते-करते उस लड़की के नजदीक जाने की कोशिश कर रहा था लेकिन एक सिक्ख ड्रायवर ने आकर बाजी मार दी और वह वहाँ से वापस लौट आया।

कहानी में इश्कमिजाजी के बारे में विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

मंत्र

इस कहानी में अंधश्रद्धा ने किस हद तक इंसानों को घेर रखा है, बयान किया गया है। यह कहानी देहात के एक परिवार की है जो अंधश्रद्धा में अपने घर की इज्जत को खोकर, धोखा खाकर भी उसी के आधीन है। फकीर, मुल्ला-मौलवींयों के चक्कर में फँस

भोली-भाली जनता जो समझती है उनकी अच्छाई के लिए खुदाने उन्हें भेजा हैं किस तरह उनके इशारे पे नाचती है इसका उदाहरण कहानी में दिया हुआ है।

चौधरी मौजू जो गाँव में रहता है, अत्यंत धार्मिक तो नहीं है लेकिन खुदा पे विश्वास करता है। उसकी एक पत्नी है फाताँ जो कुछ साधारण कारणवश उसे छोड़ मायके गई हुई थी। उसकी एक खुबसूरत बेटी जीनाँ है, जो उसका घर संभालती है। अचानक एक मौलवी वहाँ आता है। मौजू समझता है उसे खुदाने भेजा है और वह उसके इशारे पर नाचता रहता है। मक्कार मौलवी उसे फँसाता रहता है। पहले तो वह जीनाँ को धोखे से अपने हवस का शिकार बनाता है फिर बादमें मौजू को फाताँ को लाने को कह उसे भी अपने जाल में फँसाता है। जब वह अपनी दाढ़ी और पटे छोड़ जाता है तो यह मूर्ख मौजू उसे खुदा का हुक्म समझ उसे कपड़ें में लपेटकर संदूक में रखने का कहता है। वह तब भी उसे अल्लाने अपने काम के लिए भेजा हुआ करामाती बुजुर्ग समझता है। किस हद तक अंधश्रद्धा ने इन लोगों को घेर रखा है, यही कहानी में स्पष्ट होता है और यह मुल्ला-मौलवी लोग किस हद तक गिरकर जनता का शोषण करते हैं यह बताया है।

मम्मदभाई

मंटो जब बम्बई में फारस रोड़ की एक गली में रहते थे तब वह मम्मद भाई के सम्पर्क में आए थे। मम्मदाई को उन्होंने बहुत करीब से देखा था। वैसे तो वह उस गली का दादा था मगर अंदर से बहुत नर्म दिल। उसकी शख्सीयत का अंदाजा पूरी कहानी में कहानी पढ़ते वक्त आता है। उसके चेहरेपर उसकी मुँछे ही उसे दादा कहलाने के लिए उपस्थित थीं। मुँछो के कारण ही वह दादा दिखता था और वह अपनी मुँछो से बहुत प्यार करता था।

ऊपर से सख्त दिखनेवाला, दादागिरी करनेवाला, छुरी चलानेवाला, उस इलाके का मशहूर दादा मम्मदभाई मजबूरों की मजबूरी सुलझाने में आगे था। अन्याय की दास्तान लेकर आनेवालों को न्याय देता था। इस अनोखे व्यक्तित्व से मंटो मिलना चाहते थे और उनकी मुलाकात हुई वह भी उन हालातों में जब मंटो खुद बिमार थे और परेशानियों के शिकार थे। मम्मद भाई ने उनकी परेशानी डॉक्टरद्वारा सुलझाई। मम्मदभाई के बारे में अनेक अनोखी घटनाओं का विवरण मंटो ने कहानी में किया है।

जब एक वक्त अदालत के चक्कर में किसी के कहने पर उसने मूँछे मुंड़वा ली जो उसे बहुत प्यारी थीं। लेकिन उसे बाद में अफसोस हुआ की उसने मूँछे किस ड़र से मुँडवाईं, वह खुद ही अपनी मूँछो से डर गया। उसने अपने आप पर लानत भेजी और उसकी आँखों में आँसू आ गए।

गंदगी में रहनेवाले, दादा कहलानेवाले मम्दभाई जैसे भी शख्स हैं जिनके पाक चरित्र को मंटो ने उजागर किया है।

जानकी

इस कहानी में जानकी इस बेसहारा औरत की हालात को प्रस्तुत किया गया है। एक बेसहारा औरत को जीने के लिए किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, अपने दिल में प्यार और इंसानियत संजोए रखने के बावजूद उसे जमाने से ठोकर खानाही पड़ता है और उसके हालात उसे मजबूर कर देते है, कुमार्ग की राहपर जाने के लिए। जानकी भी एक ऐसी ही औरत है जिसके चरित्र की विशेषताओं के साथ कहानी में मंटो ने उसे प्रस्तुत किया है।

पेशावर से अजीज उसे फिल्म कंपनी में काम दिलवाने के सिलसिले में पूना, मंटो के पास भेजता है। वहाँ से बम्बई में उसका सफर शुरू हो जाता है। फिर यहाँ उसकी मुलाकात सैयद और नारायण से होती है। पहले भी अजीज के साथ उसके संबंध थे, उसने बच्चा गिराया था। अब वह सैयद से संबंध रखने लगी। नारायण भी उसपे लट्टू था। सैयद और नारायण के चरित्रोंपर भी मंटो ने प्रकाश डाला है जो स्टूडियो में काम करते थे। सैयद एक फिल्म में हिरो का पार्ट अदा कर रहा था। जानकी सैयद का बहुत खयाल रखती थी। उसे अजीज का भी खयाल था जो बीमार था। वहाँ जाकर भी वह उसकी सेवा करती है। सैयद बिमार होनेपर वह वहाँ से भागी यहाँ चली आई। यहाँ सैयद ने उसे बाहर निकाला। ट्रेन में चढ़ते वक्त वह गिर पड़ने के कारण वह जख्मी होती है और उसे नारायण अस्पताल ले जाता है। वहाँ नारायण उसकी देखभाल करता है लेकिन नारायण से शुरू से ही जानकी नफरत करती रहती है। फिर भी नारायण उसकी दिल से सेवा करता रहता है और उसी के कारण वह ठीक हो जाती है। अब जानकी नारायण से संबंध जोड़ती है।

मुसटेन वाला

इस कहानी में मंटो ने अपने मित्र जैदी साहब की घबराहट तथा उससे जुड़े किस्से को लिखा है।

जैदी की तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती। वे मंटो के पास आते हैं और अपनी समस्या बताते हैं। समस्या यह थी कि जैदी को उनके घरके एक बिल्ले से डर था। बात यह थी कि वह जैदी के फटकारने पर भी नहीं डरता था। वह बहुत डरावना था। उसका वर्णन जैदी ने किया है। प्यार का भी उसपर कोई असर नहीं था। चौबीस घण्टे वह जैदी के दिमाग में बैठा हुआ था। वे वहाँ से जाने के बाद मंटो और उनकी बीबी दोनों दावत पे उसके घर जाते हैं। वहाँ

मंटो को वे बिल्ला दिखाते हैं। वहाँ मंटो की बीबी के पास से गुजरते वक्त वह उसे 'बदमाश' कहती है और 'बदमाश' शब्द से जैदी के दिमाग की पहेली हल हो जाती है। वे उस बिल्ले का संदर्भ मुसटेन वाले से जोड़ते हैं। उनके खयाल से बिल्ले की शक्ल मुसटेन वाले से मिलती थी जो बचपन में स्कूल के बाहर बैठा रहता था और जिसकी कई बातें उस बिल्ले से जुड़ती थी। जैदी जब स्कूल में थे तब वह एक खत पढ़वाने उसके पास आया था और जैदी वहाँ से भागे थे। उसके बाद उन्हें तेज बुखार चढ़ा था। इसी दौरान बिल्ला उनकी टाँगो में से होकर छज्जे पर कूद गया और उसने छज्जे पर चंद कदम चलके मुडकर देखा। मंटो ने कहा 'मुसटेन वाला' और जैदी झेंप गए।

पुरानी किसी बात को अपने वर्तमान की बातों से जोड़ने की मनुष्य की प्रवृत्ति को मंटो ने बड़े ही मजाकिए ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

फुँदने

मंटो ने यह कहानी बड़े ही अजीबोगरीब किस्म से रची है। कहानी में एक कोठी के तथा परिवार के सदस्यों को बुना गया है। कहानी सिर्फ एक दूसरे में गुंथती गई है। मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से कहानी में किस्सागोई की गई है। परिवार के सभी पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को एक के बाद एक करके कहा गया है और एकदूसरे में बुना गया है। कहानी में सेक्स भी झलकता हुआ दिखाई देता है। कहानी के अंत में अकेली नारी की विकृत मानसिकता का चित्रण किया गया है। फुँदने इस प्रतिक के माध्यम से शायद लेखक ने उच्चवर्गियों की रूखी और बेकार जिंदगी तथा ऐसे माहौल में व्याप्त घुटन और मानसिक विकृति को जो जान लेने पर तुली है, मनोवैज्ञानिकता से शब्दोंद्वारा सामने रखने की कोशिश की है। इस कहानी में पूरे परिवार की मानसिकता और मानसिक विकृति से ग्रस्त नारी तथा उसने बनाए फुँदनेद्वारा ही गले में अंदर धँसकर उसकी हत्या आदि मनोवैज्ञानिक बातें दी गई हैं।

शाहदोले का चूहा

यह भी मंटो की एक अंधश्रद्धा से ग्रस्त लोगों की कहानी है। सलीमा को औलाद नहीं हो रही थी, फातमा के कहने पर वह गुजरात के शाहदोले साहब के मजार पर मन्नत करती है। और नियम के अनुसार उसे चढ़ावे के रूप में खानकाह पर चढ़ाती है। उसका बेटा बड़ा प्यारा था। वह चढ़ाने की बात को मानती नहीं थी लेकिन मजबूर होकर दुखी दिल से उसे अपने बेटे को मजार पर सेवकों को देना पड़ा।

मन्नत माँग के पैदा हुए और खानकाह पर चढ़ाए गए कई बच्चे जिन्हें शाहदोले का चूहा या चुहिया कहा जाता था। फिर वहाँ के मालिक उन्हें किसी के हाथों बेच देते थे, जो बंदर या बँदरिया बनाकर जगह-जगह घुमाते थे। बेचारे उनकी रोजी-रोटी का सहारा बनते थे।

अपने मन के विरूद्ध बेटा वहाँ दे आने पर सलीमा बेचैन हो गई थी। शाहदोले के चूहे का विचार कर-कर के उसका दिमाग चकरा गया था। सलीमा अपने बेटे को देकर बहुत दुखी थी। उसने फिर गुजरात जाकर उसकी तलाश की लेकिन वह न मिला। उसके बाद उसे एक लड़की और दो लड़के हुए।

एक दिन एक आदमी तमाशा दिखाने आता है। उस तमाशे में शाहदोले का चूहा उसका बेटा होता है। पाँच सौ रूपये में उसने उसे खरीद लिया। वह शरीर से तो बढ़ा था लेकिन बौद्धिक विकास से दूर था। शाहदोले के सभी चूहों और चूहियों की स्थिति ऐसीही थी। सलीमा ने उसे खरीद तो लिया मगर वह भाग गया। सलीमा की कोख पुकारती रही कि मुजीब वापस आ जाओ, लेकिन वह ऐसा गया कि फिर वापस न आया।

यहाँ एक ऐसी अंधश्रद्धा को दिखाया गया है, जिसमें फँसकर माँ को अपनी ममता और एक बच्चे से उसका सबकुछ खोना पड़ता है।

खाली बोतलें, खाली डिब्बे

यह एक यौन-मनोवैज्ञानिक कहानी है। लेखक को हैरत है कि शादी से दिलचस्पी न रखनेवाले कुँवारे मर्द खाली बोतलें, और खाली डिब्बें जमा करने के शौकिन क्यों होते हैं? हाँ, पालतू जानवरों का शौक ठीक है लेकिन यह खाली बोतलों और खाली डिब्बों के रहस्य से वे भी अनजान हैं।

मंटो ने अपने ऐसे कुँवारे और शादी में दिलचस्पी न होनेवाले मित्रों के किस्से सुनाए है। इस रहस्य के खुलासे के लिए उन्होंने एक किस्सा दिया है। बम्बई में एक मशहूर एक्टर था जिसका नाम था रामस्वरूप । बाद में मंटो से उनकी पहचान हो गई। उनको शादी में दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने घर में पालतू जानवर पाले थे और इनके अलावा घर में एक नौकर था। उन्हें रम की बोतलें तथा सिगरेट के डिब्बे जमाने का शौक था। इसी दौरान एक एक्ट्रैस शीला से उनको इश्क हो गया और स्वभाव में परिवर्तन भी आ गया। उन्होंने एक बिल्ली को छोड़ सब को बेच दिया, खाली बोतलों और डिब्बों को भी बेच दिया और शीला के साथ शादी कर ली। शीला औरत थी - बिल्कुल खाली। शीला खाली बोतल के समान ही थी। लेकिन लेखक का मत है हो सकता है एक खालीपन ने दूसरे खालीपन को पूरा कर दिया हो। इस तरह

खालीपन को पूरा करने के लिए ही दूसरी खाली चीजों को लोग संजोया करते हैं यह बताया गया है।

दो गड्ढे

प्रस्तुत कहानी मंटो ने पाकिस्तान में लिखी है। जहाँ सरकारी व्यवस्था के प्रति व्यंग्य कसा गया है। तारघर के इस तरफ चौक में, मैकलोड रोड की तरफ जाने वाली सड़क के शुरू में जो गड्ढे खुदे हुए थे उनसे लेखक को ऐतराज है और इसके लिए कार्पोरेशन को जिम्मेदार ठहराया गया है।

लेखक खुद के बारे में बहुत कुछ कहते हैं। वे बेचैन है क्यूँकि पाकिस्तान में, जो उन्हें प्यारा है, उनकी खुदकी असली जगह वे नहीं खोज सके। कई लोगों तथा मिनिस्टरों के लिए खास तौर पर किए जानेवाले सुविधाओं से जो आम जनता को नहीं मिलतीं उन्हें शिकायत हैं। साथ ही सरकार और जनता का नाता भी बताया है। वे मानते हैं कई ऐसी सरकारी विशेष कर बातें होती हैं, जिन्हें पूछने के वे हकदार नहीं हैं पर उन दो गड्ढों के बारे में पूछने का हक वे रखते हैं।

यह गड्ढे क्यों खोदे गए हैं या अपने आप खुद गए हैं ? यह सवाल उनके मन में पैदा होता है। इससे जो हानी होती है, फिर वह ट्रक की, ताँगे की, सायकल की, या इंसान की हो इसके लिए कार्पोरेशन दोषी ठहरता है। सिगरेट का ब्लैड-मेल, छोटे दुकानदारों का रोना आदि समस्याओं को भी कहानी में कहा गया है। वे कार्पोरेशन के खिलाफ आवाज उठाते हैं और उन दो गड्ढों पर कमीशन बिठा देने की बात करते हैं। जब तक रिपोर्ट आए और उनको भर और गड्ढे खुद जाएंगे या खोद लिए जाएंगे जिससे ऐसी दूसरी कमीशनों के लिए जगह पैदा हो सके। इस बात में भी सहकारी व्यवस्था के खिलाफ व्यंग्य कसा गया है।

टूटू

बिघडते हुए पति-पत्नी के रिश्ते में उनकी औलाद एक ऐसा बिंदू होती है जो फिरसे उस रिश्ते को जोड़ देती है, बर्करार करती है उसमें प्यार भरती है और यही इस कहानी में कहा गया है।

अता और ताहिरा के बीच मामला बिगड चुका है इसलिए वे मंटो और उनकी बीवी को बुलाते हैं। वह वहाँ जानेपर जोरों से झगड़ा छिड़ जाता है। ताहिरा की शिकायत है कि अता स्टूडियो की एक वाहियात ऐक्ट्रैस को टैक्सियों में लिए फिरता है। अता की शिकायत है कि इनायत जो प्ले बॅक सिंगर है, उसे ताहिरा हर रोज घर बुलाती है। इसी बातपर दोनों की

बहस हो रही है। बात तलाक तक पहुँचती है। टूटू का जिक्र छिड जाता है जो उनका लड़का है और अभी पैदा नहीं हुआ है जो चौथे महीने में है। टूटू को लेकर वह किसका इस विषय पर फिर झगड़ा शुरू हो जाता है। अता के उसे लेने के बातपर ताहिरा बेहोश होती है, बाल नोच डालती है, कमीज फाड़ डालती है। यह सब देख अता परेशान होता है। ताहिरा होश में आते ही वह उसका हाथ अपने हाथ में थपकने लगता है और उसे समझाता है कि टूटू तुम्हारा है। फिर बात संभल जाती है। मंटो और उसकी बीवी वहाँ से आते हैं। बाद में उनको टेलिफोनद्वारा खबर मिलती है कि ताहिरा को मरी हुई लड़की हुई है। लेखक सोचते हैं, अब अगर उन दोनों का झगड़ा हुआ तो उसे कौन टूटू चुकाएगा? उसकी बुनियाद पर ही यह रिश्ता टिका हुआ था।

मंतर

इस कहानी में मंटो ने एक ऐसे बच्चे के बारे में लिखा है जिसकी उम्र तो आठ साल की है मगर उसकी शरारतों और कारनामों की वजह से उसके माता-पिता हमेशा परेशान रहते हैं। इस कहानी का यह पात्र जिसका नाम राम है, दिखने में तो थोड़ा मोटा और भद्दा लगता है पर वह उतनाही होशियार और चालाक है। इस लड़के का नाम तो राम था पर इसकी शरारतें बिलकुल इसके नाम के विपरित थीं। राम इतना शरारती है कि मानो लगता है 'मुह मे राम और बगल में छुरी' यह मिसाल इसी के उपर से पड़ी हो।

राम के पिता श्री शंकराचार्य जो कि पेशे से वकील है वे राम की शरारतों पर हर बार उसे प्यास से या मार से, अलग-अलग तरीके से समझाने की कोशिश करते, उसे सुधारने की कोशिश करते। पर राम पर इस बात का कोई असर नहीं होता और होता भी कैसे ? दोनों का देखने का नजरिया जो अलग अलग था।

मसलन एक बार राम ने घरमे से दो टमाटर खाएँ। इस पर शंकराचार्य जी इस बात को चोरी कहने लगे। तो भोले राम का यह कहना था कि अपने ही घर के टमाटर खाने में कैसी चोरी। कई बार तो शंकराचार्य जी उसे समझाने में असमर्थ हो जाते।

एक बार शंकराचार्य जी को काम के सिलसिले में पूना जाना था। उन्होंने राम को भी साथ में ले लिया क्यूँकि पूना में उनकी बहन रहती थी जो राम को बहुत दिनों से देखना चाहती थी। जब सफर शूरू हुआ तो राम ट्रेन में खिड़की के करीब बैठ गया और सर पर टोपी थी। शंकराचार्य जी ने कई बार टोपी उतारकर राम के हाथ मे दी पर वह फिर उसे पहन लेता। आखिर में उन्होंने एक झटके से टोपी निकालकर सिट के नीचे रख दी। राम को लगा टोपी गई और वह रोने लगा। थोड़ी देर के बाद शंकराचार्य जी ने एक मंत्र के सहारे उसकी टोपी वापस

लाने का नाटक किया और एक ऐसा मंत्र पढ़ा जिसका किसीसे कुछ संबंध नहीं था। राम यह समझ चुका था। थोड़ी देर बाद उसने शखंकराचार्य जी से कहा कि आपके कागज खिड़की से बाहर फेंक दिए हैं। यह सुनकर उनके होश उड़ गए। उनके मन में तरह-तरह के विचार आने लगे कि अब केस के बारे में क्या किया जाए। फिर राम ने उनकी तरह एक नकली मंत्र पढ़कर उनके कागजात उन्हें वापस ला दिए।

इस कहानी से यह प्रतीत होता है कि बच्चों को कम अकलमंद या छोटा समझकर बेपरवाही से उन्हें अगर कुछ सिखाया जाए तो वह गलत होगा। उनकी समझ को पहचानकर उन्हें सही बाते सिखानी चाहिए और उनका सही समाधान करना चाहिए वरना वो गलत बातें ही सिख जाएंगे।

सुरमा

फहमीदा को सुरमा बहु पसंद है अत: उसकी शादी में उस सुरमें का जो विशेष रूप से उनके यहाँ आता था, अपनी माँ से माँग की और वह उसे मिली। सुरमे की विशेषता को भी फहमीदा बताती है। पति के सुरमा अधिक लगाने की बात करने पर वह रोती है और पति के समझाने पर भी कि उसे कोई ऐतराज नहीं सुरमा लगाना छोड़ती है। जब उसे बच्चा होता है तब वह उसे सुरमा लगाती है। वह बड़ा प्यारा था। उसके सालगिरह के पहले ही वह निमोनिया की वजह से चल बसता है। फहमीदा को बड़ा दुख होता है। इस घटना के बाद फहमीदा के होश उड़ जाते है। उसके मन-मस्तिष्क में सुरमा ही सुरमा रहता है। वह हर बात कालिख के साथ सोचती है। पति को वह सुरमा लाने को कहती है। उसे वह पसंद नही आया तो वह खुद अपने पसंद का सुरमा लाती है। सुरमा लगाकर वह सोती है और कभी नहीं उठती है।

किस कदर एखाद चाहत इंसान के दिल में घर कर बैठती है इसका उदाहरण प्रस्तुत कहानी में मिलता है।

मिलावट

मंटो ने इस कहानी में कहानी के पात्र अली महंमद के माध्यम से यह बताया है कि दुनिया में कितनी मिलावट है। अली महंमद जो एक गरीब मगर मेहनती लड़का था, जिसने अपनी कडी मेहनत और इमानदारी से एक मणियार का दुकान खड़ा किया था। जब उसे अकेलापन महसूस होने लगा तो उसने शादी करने का फैसला किया। जब शादी की तो उसे धोखा हुआ। जिस लड़की को उसने पसंद किया था, असल में वह लड़की ही नहीं थी। इस धोखे की वजह से वह अपनी दुकान बेचकर लाहौर चला गया। रास्ते में जेब कतरों ने उसके

पैसों पर हात साफ किया। तब आगे वह अपना गुजारा करने के लिए हल्दी और मिर्च पिसने वाले चक्की पे काम करना शुरू करता है। जहाँ हल्दी में पिली मिट्टी और मिर्च में इट मिलाई जाती थी। वह सोचता रहता कि दुनिया में सब मिलावट है, धोखाही धोखा है। इसलिए वह ईमानदारी छोड़ मिलावट का धंदा शुरू करता है। वह भी हल्दी में मिट्टी और मिर्च में इट मिलाता है। वह अब बहुत कमाने लगता है। लेकिन एक दिन वह मिलावट करते हुए पकड़ा जाता है और उसे सजा हो जाती है। तब उसे अपने पाप का एहसास होता है। और वह आत्महत्या करने की सोचता है। कई कोशिशें नाकाम हो जाती हैं। यहाँ उसे मौत भी धोखा देती है। इसलिए वह एक जहर की बोतल खरीदता है और पी जाता है लेकिन उस जहर का भी कुछ असर नहीं होता क्योंकि उस जहर में भी मिलावट होती है। लेखक को यहाँ यह बताना है कि दुनिया में जिंदगी और मौत सहित सभी में मिलावट है।

इज्जत के लिए

चुनीलाल जो माडर्न न्यूज एजेंसी का मालिक था शहर में इज्जत रखे हुए था। उसका बर्ताव बडे लोगों जैसा था। शहर के जितने बड़े अफसर थे वे चुनीलाल के परिचित थे। वह बड़ा ही मेहमाननवाज था। अपनी इज्जत बढ़ाने के लिए वह दुसरों को, ज्यादातर अफसरों को खुश रखता था। मगर खुद उन आदतों से दूर था जो कि रईसों के होते हैं। वैसे तो वह बड़ा आदमी नहीं था लेकिन उसके मन में वह इच्छा थी और एक दिन वह मौका उसे मिला, आशा बँधती नजर आई ।

शहर के एक बड़े अफसर के बेटे से उसकी दोस्ती होती है। उसका नाम हरबंस था। चुनीलाल उसके सब शौक पूरे करता है। हरबंस की दोस्ती से उसकी धाक और भी ज्यादा बढ़ने लगती है। हरबंस के गलत कदम आग बढ़ते जाते हैं। एक दिन उसकी हवस की आग में एक लड़की शिकार होती है और वह लड़की रूपा चुनीलाल की बहन होती है। दोनों इस बात से अनजान होते हैं मगर खबर मिलते ही हरबंस ड़र जाता है। ऐसी स्थिति में भी चुनीलाल हरबंस और उसके बाप की इज्जत का खयाल करते हुए वह खुद को गोली मार लेता है। अगले दिन अखबार में खबर आती है कि मॉडर्न न्यूज एजेंसी के मालिक चुनीलाल ने अपनी सगी बहन के साथ मुँह काला किया और बाद में गोली मारकर आत्महत्या कर ली।

इज्जत के लिए लोग क्या कुछ नहीं करते और वही इज्जत उन्हें ठोकर मारती है। दुसरों की इज्जत का खयाल करते-करते लोग खुदकी इज्जत गवा बैठते हैं और निर्दोष होकर भी इस झूठी इज्जत के चक्कर में फँसकर अपनी जान गवा देते हैं। यही कहानी में बयान किया गया है।

तरक्कीपसन्द

कई लोगों को जब अपनी छोटी सी कामयाबी पर लगता है कि हम बहुत बड़े हो गए हैं, तो वह उनका भ्रम होता है और 'तरक्कीपसन्द' इस कहानी में जोगिंदरसिंह के माध्यम से यही बताने की कोशिश की गई है। जोगिंदरसिंह खुदको थोडी-सी कामयाबी पर बहुत बड़ा तरक्कीपसंद लेखक समझ रहा था। उसके मत से 'तरक्कीपसन्द' याने जो आगे जाना चाहता है, प्रगति करना चाहता है। खुद को हमेशा तरक्कीपसन्द समझता था। उसकी कथाएँ पत्रिकाओं में छप जाने के बाद से वह दुसरे बड़े लेखकों को आमंत्रण दे के घर बुलाता और खुद कितना बड़ा लेखक है यह दिखाने की कोशिश करता। ऐसे ही एक कवि हरेंद्रनाथ त्रिपाठी को वह घर बुलाता है। उन्होंने भी उसकी कथाओं की प्रशंसा की थी। त्रिपाठी के आने से उसको बहुत बड़ा सम्मान मिलेगा इस खयाल में वह आचरण करता था। कुछ दिनों के बाद त्रिपाठी अपने परिवारसहित वहाँ पधारते हैं। उनके साथ उसके पहले चार दिन बहुत मजे से कटे लेकिन बाद में उनकी कहानिया सुनते-सुनते वह तंग आ गया। किंतु अपने तरक्की पसंद होने के नाते चुप बैठना पड़ता था। त्रिपाठी हररोज एक कहानी लिखते और उसको सुनाते। इस समय वह अपने पत्नी को भी दिल खोलके मिल नही सकता था। इसपर उसका दिमाग सोच रहा था की तरक्कीपसंद की ऐसी की तैसी लेकिन इस त्रिपाठी को यहाँ से निकालके पारिवारिक जीवन फिरसे शुरू करें। लेकिन त्रिपाठी अब भी उनके बीच दीवार बनके खड़े थे।

खुद को तरक्कीपसन्द कहलवानेवालों की इस चक्कर में हुई बुरी हालत तथा समस्या को इस कहानी में बताया गया है।

शहीदसाज

'मैं' जो कहानी का पात्र है अपने जीवन में कई काम मेहनत से करके तरक्की करता है। बहुत से गलत ढ़ंग के काम या फिर जो लोगों को फँसानेवाले काम हैं वही यह करता है। लेकिन सबकुछ उसके पास होने के बावजूद वह अपने दिल पर बोझ-सा महसूस करता है। इस बोझ के कारण का पता वह लगाता है तब उसे पता चलता है कि उसने कोई नेक काम नहीं किया। नेक काम के लिए वह राह ढूँढ़ता है। नेक काम करने के बहुत से तरीके वह सोचता है। घटिया खयालात के 'मैं' को कोई नेक काम कैसे मिलेगा? नेकी उसे मालूम ही नहीं तो वह नेक काम कैसे ढूँढ़े? उसे कोई काम पसंद नहीं आता। हर काम में उसे खोट दिखाई देती है जैसे खैरात देना, लोगों के दुख-दर्द कम करना, अस्पताल बनवाना, मसजिद बनवाना और वह उन्हें न करने का फैसला करता है। तभी उसे लोगों के शहीद बनाने के नेक काम का खयाल

पसंद आता है और वह उसकी तलाश में लगता है। लेकिन पाता है कि कोई शहीद होने को तैयार नहीं। फिर भी न हारते हुए मेहनत से, बहुत शक्ले लड़ाकर वह कई लोगों को शहीद करता रहता है। इससे जो बचे रहते थे उसके खयाल से खुदा को उनकी शहादत मंजूर नहीं है।

नेकी करने के लिए भी किसी घटिया इंसान की मानसिकता किस हद तक घटिया ही बनी रहती है तथा उसे नेकी करने की राह भी नहीं मिलती, यही इस कहानी में बताया गया है।

टोबा टेकसिंह

इस कहानी में लेखक ने उस वक्त के हालातों को बयान किया है जो हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बँटवारे के समय पैदा हो चुके थें। उस वक्त के नेताओं ने हिदुस्तान और पाकिस्तान नामक दो मुल्क तो बना दिए पर उन्होंने यह नहीं सोचा कि क्या इन दोनों मुल्कों के लोग इस बँटवारे को चाहते थे? यह कहानी एक ऐसे इंसान के बारे में है जो है तो पागल पर इस बँटवारे से खुश नहीं।

इन दोनों मुल्को के रहनेवालों ने देश का बँटवारा होने के बाद दोनों तरफ के पागलों का तबादला करने की सोची और उसका दिन भी तय किया। दोनों तरफ के पागल तक इस बात से नाखुश थे। बाकी सब पागलों के घर या तो हिंदुस्तान में थे या पाकिस्तान में पर इस कहानी के मुख्य पात्र का घर कहा है यह कोई नहीं जानता था। यह पात्र जिसका नाम बिशनसिंह था। वह पागलखाने में पंद्रह साल से था पर किसी से भी बात नहीं करता था। शुरूवात में तो उसके घरवाले उसे मिलने आते थे पर जब बँटवारा हुआ तो वे भी आने बंद हो गए। बिशनसिंह खुद यह जानना चाहता था कि 'टोबा टेकसिंह' जहाँ उसकी कई जमीनें थीं, वो है कहाँ। पंद्रह साल पागलखाने में रहते-रहते वह अपने घरवालों को तक भूल चुका था। जब तबादले का दिन आया तो दो तरफ के पागलों को बाघा बॉर्डर पर लाया गया। वहाँ मुश्लीलों से और सब पागलों का तबादला किया पर जब बिशनसिंह की बारी आई तो उसने अधिकारी से पूछा कि 'टोबा टेकसिंह' कहाँ है? उसके यह बतानेपर कि 'पाकिस्तान में' है, वह बौखला गया और उसने हिंदुस्तान जाने से इन्कार किया। उसे बहुत समझाया गया लेकिन वह न माना। आखिर बिशनसिंह जो पन्द्रह वर्ष तक दिन-रात अपनी टाँगों पर खड़ा रहा था, ऐसी जगह पर औंधे मुँह लेटा जो की न हिंदुस्तान में, था न पाकिस्तान में।

इस कहानी में लेखक ने बँटवारे के बाद वाले उस भयान वास्तव का लेखन किया है। ऐसे हालात जो शायद लोग चाहते नहीं थे। इस बँटवारे की वजह से कई लोग अपने ही घर से बेघर हो गए तो कई लोग यह सोचते रहे की उनका घर आखिर है कहाँ ?

सहाय

इस कहानी में एक भडवैये जिसका नाम सहाय है उसके चरित्र के बारे में तथा मजहब के नामपर हुए दंगों में मारे गए मासूमों के बारे में बताया गया है। वह औरतों का दलाल होकर भी उसका जमीर साफ है। क्योंकि वह उन तमाम लड़कियों को जो उसके धंधे में शामिल थीं अपनी बेटियाँ समझता था। उनके नाम से उसने पोस्ट ऑफिस में सेविंग खाता खोल रखा था और हर महीने उनकी कुल आमदनी वह वहाँ जमा करता था। वह एक अच्छा इंसान होने के बावजूद एक दिन मजहब के नाम पर हुए दंगल में मारा गया। वह था तो हिंदू लेकिन उसने कभी हिंदू-मुस्लिम भेद नहीं किया।

इंसानियत एक ऐसी चीज है जिसका कोई मजहब नहीं होता। मजहब, दीन, ईमान, यकीन, धर्म आदि ये जो कुछ भी हैं हमारे जिस्म के बजाय रूह में होते हैं। जिन्हें छुरे, चाकू और गोली से फना नहीं किया जा सकता यही कहानी में बताया है।

खोल दो

मंटो जिन्होंने अपनी कहानियों में जीवन के सच का लेखन किया है, जीवन के एक ऐसे ही गंभीर तथा यथार्थ स्थिति के सच का चित्रण इस कहानी में भी किया है।

यह कहानी उस वक्त ही है जब मुल्क का बँटवारा हुआ था और पाकिस्तान से हिंदु हिंदुस्तान में आ रहे थे और हिंदुस्तान से मुसलमान पाकिस्तान भेजे जा रहे थे। हालात इतने खराब थे कि कोई भी सुरक्षित नहीं था।

यह कहानी उस बाप-बेटी के बारे में कही गई है हो बँटवारे के समय अमृतसर से मुगलपुरा आ रहे थे। सफर के दौरान सिराजुद्दीन की बीबी को मार दिया गया था। बेटी जिसका नाम सकीना था, खो जाती है। सिराजुद्दीन ऐसे हालातों से गुजरता है कि आठ-दस दिन तक उससे उभर नहीं पाता। इन हालातों से बाहर आने के बाद वह अपने ही मजहब के आठ-दस लड़कों को अपनी बेटी को ढूँढ़ने को कहता है।

कई दिनों तक ढूँढ़ने के बाद एक दिन सिराजुद्दीन को उसकी लड़की अस्पताल में मिलती है जो कि करीबन मुर्दावस्था में होती है। डाक्टर सकीना की नब्ज टटोलते हुए सिराजुद्दीन से खिड़की खोल देने को कहता है, यह सुनकर सकीना के मुर्दा जिस्म में जुंबिश होती है और वह अपना इजारबंद खोलकर सलवार नीचे सरका देती है।

वो आठ-दस उनके ही हम-मजहब नौजवान सकीना के इस हालात के जिम्मेदार थे। उन्होंने इतनी बेदर्दी से, इतनी अमानुषता से उसके साथ बलात्कार किया था कि सकीना

की मानसिकता ही घायल हो चुकी थी और लगभग मुर्दा अवस्था में भी उनके इशारों के असर से उसके जिस्म में हलचल पैदा होती है। सकीना की इस स्थिति को देखने के बाद डाक्टर सिर से पैर तक पसीने से गर्क हो जाता है। लेकिन कितना दर्दनाक विरोधाभास है कि सकीना की हलचल को देखकर उसका बाप खुश हो जाता है कि उसकी बेटी जिंदा है।

इस कहानी में अपने ही मजहब के लोगों द्वारा किया गया अत्याचार तथा उस परिस्थिति में सकीना, सिराजुद्दीन और डाक्टर की हुई मानसिकता का चित्रण किया गया है।

खुदा की कसम

इस कहानी में पात्र एक माँ हे जो अपने एकलौती बेटी को ढूँढ रही है। जो भारत-पाकिस्तान बँटवारे के दौरान हुए दंगल में भगाई गई है या शायद खो गई है। वह माँ अपनी बेटी को एक शहर से दुसरे शहर, एक गाँव से दूसरे गाँव, हर गली, मुहल्ले, हर कहीं ढूँढ रही है। उसको ना अपने कपडों का ना अपने सेहत का खयाल है। वह सिर्फ अपनी इकलौती बेटी को ढूँढती फिर रही है। उसकी यही ममता उसे अभी तक जिंदा रखी हुई है। उसको अपनी ममता पर इतना यकीन है कि वह उसकी बेटी मर गई है यह मानने को तैयार नहीं। एक दिन वह उसको पहचान लेती है लेकिन लड़की उसे न पहचानने का नाटक करती हुई दूरसे ही चली जाती है। जब उसे मंटो खुदा की कसम खाकर बताते हैं कि वह सचमुच मर गई है, यह सुनते ही वह ढ़ेर हो जाती है।

इस कहानी में लेखक ने एक माँ की ममता को चित्रित किया है जो यह मानने को ही तैयार नही कि उसकी बेटी मर चुकी है। साथही दंगों के माहौल के कारण उत्पन्न औरतों पर हुए भीषण परिणामों को कहानी में दिखाया गया है।

मोजेल

यह उस समय की कहानी है जब भारत-पाकिस्तान विभाजन के दौरान दंगे-फसाद हो रहे थे। त्रिलोचन, कृपालकौर और उसका परिवार इसी में फसे हुए थे। त्रिलोचन को कृपालकौर के भाई निरंजन पर बहुत क्रोध आता था। वह कृपालकौर से प्यार करता था।

उस रात को वह कृपालकौर के बारे में सोचते-सोचते मोजेल के बारे में सोचने लगता है जिससे मोजेल और उसके बीच की कहानी सामने आती है। मोजेल एक यहुदी लडकी थी जो उसी के ठहरने की जगह अडवानी चेम्बर्स में रहती थी। वह अलग किस्म की लडकी थी जैसे यहुदी होते हैं। वह बहुत ही बेफिक्र किस्म की और मनमानी लड़की थी। कहानी में उसको मिलने से लेकर उनके बीच के संबंध तक वर्णन किया गया है। मोजेल के

व्यक्तित्व के सारे पहलुओं को सामने लाया गया है। उसके और त्रिलोचन के बीच त्रिलोनच का सिक्ख धर्म आ जाता था। मोजेल की कई आदतें उसे खटकती भी थीं।

कृपालकौर और उसका परिवार मुसलमानों के मुहल्ले में रहता था। कृपालकौर को बचाने के लिए मोजेल त्रिलोचन की मदद करती है। अपनी जानपर भी खेलकर वह स्थितियों का सामना करती है। अपना वेश कृपालकौर पर डालकर खुद नंगी रहती है। उन्हें बचाने के लिए वह तरकीबें बनाती है और उनसे गुजरते हुए खुद खून से लथपथ होती है। उसे अपना खयाल ही नहीं होता है। अपने तन और जान पर खेलकर वह उन्हें बचाती है।

इस कहानी में उस समय के दंगों की स्थिति बयान की गई है और मोजेल जैसे पात्र को उजागर किया गया है जो सचमुच इंसानियत के ऊँचे स्थान को अपने में समाए हुए है।

गुरमुखसिंह की वसीयत

यह कहानी भी बँटवारे के समय छिड़े दंगों के वक्त की है। माहौल बहुत तंग हो चुका था। प्रस्तुत कहानी की घटना अमृतसर की है। मियाँ अब्दुल हई जो रिटायर्ड सब जज थे जिन को विश्वास था कि हालात बहुत जल्द ठीक हो जाएँगे। लेकिन हालात बिघडते जा रहे थे। उनको एक बेटी सुगरा जो बडी थी और बेटा बशारत जो छोटा था, दो औलाद थे। उनकी हालत भी बहुत परेशान थी। ऐसे हालात में ही मियाँ अब्दुल साहब फालिज की वजह से बहुत ही बिमार पड़ गए थे। घर की हालत बहुत गंभीर हो गई थी। सुगरा और बशारत बहुत परेशान थे। घर में एक बूढ़ा नौकर था जो दमे की वजह से एक कोने में पड़ा रहता था जो सुगरा के फटकारनेपर चला जाता है। सुगरा उसकी राह देखती रहती है।

ईद की शाम को दरवाजे पर दस्तक होती है। दोनों घबरा जाते हैं। मियाँ अब्दुल साहब बताते हैं कि दरवाजा खोलो, गुरमुखसिंह है। यह वह इंसान था जिसका काम उन्होंने पेंशन लेने से कुछ समय पहले किया था। तबसे वह छोटी ईद से एक दिन पहले, रूमाली सेवैयों का थैला लेकर आता था। सुगरा ने झिरी में से देखा तो वह कोई और ही था। पूछने पर पता चलता है कि वह गुरमुखसिंह का बेटा है और गुरमुखसिंह अब इस दुनिया में नही है तथा बाप के वचन के मुताबिक सेवैया देने आया है। मियाँ साहब की पूछताछ के बाद वह चला जाता है। सुगरा सोचती रहती है कि वह उसे ठहराए और अपने बाप के लिए किसी डॉक्टर का बंदोबस्त करने को कहे। लेकिन जब कहानी आखरी मोड पर पहुँचती है तो पता चलता है कि वह सिर्फ बाप से किया हुआ वचन निभाने वहाँ आया हुआ होता है। उसके बाद बाहर उसे दंगलवादी मिलते है और जज-साहब को मारने की बात करते है तब उसे कोई ऐतराज नहीं होता है, वह फैसला उनके मर्जीपर छोड़, उनको उनके सुपुर्द कर चला जाता है।

इस कहानी में एक इंसान है जो एहसान के बदले अपनी ओर से छोटीसी भेट ईद को देने को फर्ज मानता है इसमें वह खुद को बाँधता है और उसे निभाने के लिए मरतेवक्त बेटे को वचन दे जाता है और बेटा है जो बाप का वचन तो निभाता है लेकिन इंसानियत का खात्मा कर देता है, हैवानियत से भी बदतर तरीके में पेश आता है, उसके दिल में उन लाचारों के प्रति जरासा भी तरस पैदा नहीं होता है यही दिखाया गया है।

रामखेलावन

यह कहानी एक धोबी की है जो मंटो के संपर्क में आया था। वह बहुत शरीफ और भरोसेमंद था। मंटो के बड़े भाई के यहाँ भी वह पहले काम कर चुका था जो बहुत बड़े थे और वह मंटो को उनके भाई के रिश्ते से देखता था। इज्जत करता था, उनपर विश्वास करता था। तंगी की हालत में उसे जो दिया जाय वह लेता था, शिकायत नहीं करता था। मंटो की शादी हो गई। बीवी को उसपर ज्यादा पैसे लेने के संदर्भ में शक आ रहा था तो उसने उसे आजमा लिया। शक का साफ निरसन हो गया।

बाद में दिल्ली जाने तथा फिर बम्बई आने पर मंटो की भेट कई बीमार, बेईमान और झगडालू धोबियों से हुई जिन्हें वह बदलता रहता था। एक दिन रामखेलावन खुद आ गया और मंटो को राहत मिली। एक बार वह बीमार पड़ा और उसका इलाज उसने घटिया किस्म के शराब से किया जिसका नतीजा यह हुआ कि वह मौत के दरवाजे तक पहुँच गया। उस बिमारी से मंटो की बीवी की सहाय्यता से डाक्टरी इलाज द्वारा वह ठीक हो गया। वह उन्हें लाख दुवा देता रहा।

बँटवारा हुआ तो हिंदू-मुसलमान दंगे शुरू हो गए। हालात बहुत बिघड़ रहे थे। एक दूसरे के मुहल्ले में हिंदू-मुसलमान दोनों का जाना खतरे से खाली नहीं था। फिर भी रामखेलावन मंटो के यहाँ आता रहा जो मुसलमानों का मुहल्ला था। उसे कोई खतरा नहीं था।

मंटो ने हालात बिघडते देख बीवी को लाहौर भेज दिया और खुद जाने का इरादा तय किया। धोबी से कपड़े लेने के लिए जब वे महालक्ष्मी गए तो वहाँ धोबीयों के दंगे चल रहे थे। वहाँ जाने के बाद उन्हें रोक लिया गया और पूछा गया कि वे हिंदू हैं या मुसलमान है। वो उसके इर्द-गीर्द घूम रहे थे। जब के मुसलमान होने के बताने पर उन्हें रामखेलावन मारेगा जो उसका धोबी था यह तय हुआ। वह शराब के नशे में धुत था और हाथ में डंडा लिए मंटोपर बरसनेही वाला था कि करीब से देखने पर उन्हें पहचानने पर वह होश में आकर साथियों को समझाने लगा कि वे उसके साब हैं। उनमें तू-तू चल रही थी कि मंटो वहाँ से खिसक गए।

वह लौटकर अपने फ्लैट में गए। मंटो बहुत बेकरार थे। वे अभी फ्लैट में ही थे और जल्दी वहाँ से जाने की सोच रहे थे। इतने में वहाँ रामखेलावन आया उनके कपड़े देने। वह अपने किए पर शरमिंदा था। उसने बहकावे में आकर ऐसा किया था। वह मंटो के भाई तथा बीवी के एहसानों तले दबा था। उसको इस बात का बहुत दुख हुआ और वह वहाँसे चला गया।

प्रस्तुत कहानी में बँटवारे के समय की छिड़ी दंगों की भीषण स्थिति तथा रामखेलावन जैसे पात्र की मानसिकता जो इंसानियत को लिए हुए है दिखाया गया है।

नंगी आवाजें

विभाजन जैसी विभीषिका के परिणामस्वरूप लोगों की मानसिकता किस हद तक प्रभावित हुई थी, उनके दिलो-दिमाग पर इसका कितना असर हुआ था यह मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से कहानी में बताया गया है।

भोलू और गामा दो भाई थे जो शरणार्थी थे। रहने की जगह की समस्या थी। एक बड़ी बिल्डिंग के जो सर्वेन्ट क्वार्टर थे उसी में यह भी रहते थे। गर्मियों में वहाँ रहना बहुत तकलीफदेह था। बहुत लोग वहाँ रहते थें इसलिए वहाँ भीड भी थी और उपर पर्दे के बंदोबस्त न होने कारण शादीशुदा लोगों को मुसीबत से गुजरना पड़ता। फिर भी कई लोग पर्यायी व्यवस्था करते थे। ऊपर कोठे पर सोने से भोलू की तबीयत में अजब क्रान्ति आ गई। वह शादी के खयाल से दूर था लेकिन अब वह शादी करना चाहता था। कोठे पर अब उसे टाट के परदे के पीछे से अजीब आवाजें आती थीं और वह उनसे परेशान होता है। गामा ने उसकी शादी कर दी। लेकिन औरों की तरह टाट के परदे के पीछे जहाँ औरों की आहट उसे सुनाई देती थी पत्नी के साथ संबंध करना उसके लिए मुश्किल हो गया। वह बहुत बेचैन था। उसकी मानसिकता ही इस अजीब कारणवश विवश हो गई थी। इस माहौल में वह अपने पत्नी के साथ यौनसंबंध स्थापित नहीं कर पाता। सात रातों की इसी स्थिति के बाद वह तंग आकर पत्नी को मायके भेज देता है। इस बात पर भाई के अचरज और पूछताछ पर भोलू बात को टाल देता है। कुछ दिनों बाद जब भाईने इसी बात को छेड़ा तो वह बाहर जाकर चारपाई पर बैठ गया। वहाँ से वह गामा और उसकी बीबी के बीच की बाते सुनता है। उनकी बात से भोलू के दिल में छुरी-सी उतर गई। उनकी बात में उसे बीबी में दिलचस्पी नहीं है तथा वह नामर्द है ऐसी बातों का जिक्र था। इससे उसका दिमागी संतुलन बिगड गया। अब वह बिलकुल नंग-धडंग बाजारों में घूमता-फिरता है। कहीं टाट को लटका देखता है तो उसको उतारकर टुकड़े-टुकड़े कर देता है।

टाट के परदों के पीछे की आवाजें जिसके कारण वह शादी करने पे विवश होता है और उन्हीं आवाजों के कारण चाहने के बावजूद पत्नी से संबंध बर्करार न रखने से दिए हुए नामर्द के करार से वह पागल हो जाता है। उन आवाजों को लेखक ने नंगी आवाजें नाम दिया है जो बहुत ही सार्थक है।

यजीद

हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बँटवारे के वक्त जो दंगे हुए उसमें करीमदाद ने अपने बाप को खो दिया था। उसने अपना सबकुछ खो दिया। उसका मकान, फसलें भी जल गई। इस वक्त गाव में और भी वारदाते हुई थीं। सैकड़ों जवान और बूढ़े कत्ल हुए थे। कई लडकियाँ गायब हुई थीं। लोग कातिलों को बड़ी गालियाँ देते पर करीमदाद चुप रहता क्योंकि उसका मानना था कि जो कुछ भी हुआ है उसमें उनकी भी, मुसलमानों की भी गलती है। उसे रोना-धोना पसंद नही था। वह एक निड़र इंसान था।

उन दिनों में यह अफवाएँ फैली थीं कि हिंदुस्तान दरिया बंद करनेवाला है। इसका मतलब था कि उनकी सारी फसलें तबाह होंगी और वहाँ भूखमरी छाएगी। करीमदाद का मानना था कि दुश्मनी निकालने के लिए हिंदुस्तान जो भी करेगा वह हिंदुस्तान के नजरिये से जायज है और उनके हिसाब से वह जुल्म है। ऐसे वक्त में हिंदुस्तान वालों को गालियाँ देते रहना अच्छा नहीं बल्की आनेवाली मुसीबत का सामना करना चाहिए, यही करीमदाद की सोच थी।

उन्हीं दिनों में करीमदाद को एक लड़का होता है। वह उसका नाम 'यजीद' रखता है और बीवी के अचरज पर कहता है, ''जरूरी नहीं कि यह वही यजीद हो। उसने दरिया का पानी बंद किया था - यह खोलेगा।''[12]

यजीद ईस्लाम का वह शक्स था जिसने बहुत अत्याचार किए थे। करीमदाद समझता है कि उसका बेटा भी सिर्फ नाम रखने से वही यजीद हो यह जरूरी तो नहीं। दुश्मन अपनी दुश्मनी दिखाएगा ही, हम भी उसके दुश्मन ही है, हम भी तो उससे दुश्मनी निभाते है। दुश्मनी तो अपनी-अपनी जगह दोनों मजहब निभाते हैं। इस समय दुश्मन को न कोसते हुए खुद अड़िग रहना चाहिए और अफवाओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए। जरूरी नहीं कि उनकी सोच भी आपकी सोच से मिलती हो। यहीं प्रस्तुत कहानी में कहा गया है।

टिटवाल का कुत्ता

इस कहानी में लेखक ने कुत्ते के माध्यम से भारत और पाकिस्तान के बीच

किस तरह के तनाव पैदा हुए थे और उससे वहाँ रहनेवाले लोगों को किस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता था इसपर प्रकाश डाला गया है।

टिटवाल क्षेत्र के दो पहाड़ों पर हिंदुस्तान और पाकिस्तान की सेनाएँ तैनात हैं। इस क्षेत्र में एक कुत्ता आ जाता है और भारत के सिपाहियों के पास पहुँचता है तो उसे 'चपट झुणझुण' नाम दिया जाता है। जब वहाँ से वह पाकिस्तानी सैनिकों के पास जाता है तो वे उसके गले में जवाब के लिए 'सपट सुनसुन' लिखके बाँधते हैं। और यह जवाब देकर जब भारत के सैनिकों की ओर भेजते हैं तो दोनों के बीच रास्ते में ही उसे भारत की ओर जाने के लिए पाकिस्तानी गोलियाँ चलाते हैं और उनके यहाँ जानेपर भारतीय सैनिक उसके जाने के लिए गोलियाँ चलाते हैं। उसी गोलीबारी में उसकी मौत हो जाती है। इसपर लेखक ने मार्मिक टिप्पणी की है अब कुत्ते को भी भारतीय या पाकिस्तानी होना पड़ेगा। कुत्ते जैसे ही इंसान की भी हालत है। उसे भी अपने धर्म के हिसाब से मुल्क को चुनना होगा। जो मुल्क एक अर्से पहले एकही था।

इस कहानी में यह दिखाई देता है कि बँटवारे की वजह से एक देश में रहनेवाले, भाई-भाई कहलानेवाले आदमी एक दूसरे के दुश्मन हो गए। इसका असर दोनों देशों के सिपाहियों पर ही नहीं, देशों के हर आदमी पर छा गया। कुत्ते के माध्यम से दोनों देशों के लोगों की मानसिकता को सही में दर्शाया गया है।

शरीफन

बँटवारे के दिनों में बहुत दंगे फसाद चल रहे थे। उस वक्त सब लोग जानवर बन गए थे। किसी को भी किसी की जान, इज्जत और आब्रु का खयाल नहीं था। इस कहानी में लेखक ने इसका यथार्थ उदाहरण दिया है।

कथा के मुख्य पात्र कासीम के माध्यम से लेखक ने दंगों में किसी अपने की हत्या के सदमे से होश खोकर बेकसूर होकर भी आदमी दुसरे मजहब के बेकसूरों को किस अमानुषता से कत्ल कर रहा था और अकारणही कई हत्याओं का सिलसिला जारी था, यह बताया है। कासीम एक मुसलमान था जो बँटवारे के समय के दंगो में घायल हुआ था। उस अवस्था में वह अपने घर पहुँचता है। तब उसे अपने घर में बीवी की लाश दिखाई देती है और उसे अपनी बेटी की याद आती है। तो वह सामने वाले कमरे में जाकर देखता है। जब वह वहाँ जाके देखता है तो उसका वजूद ही हिल जाता है, क्योंकि सामने उसके लड़की की लाश पड़ी होती है जो पूरी नंगी होती है। कासिम का खून खौल उठता है और वह अपनी लडकी के बदन

पर कपड़ा फेंक देता है। वह गुस्से में पड़े लकडी फाड़ने वाले गंडास को उठाके घर से बाहर निकलकर रास्ते पे आता है। वहाँ एक सिक्ख लड़के को वह मारता है। उसपर इतना खून सवार रहता है कि उसे सामने तीन-चार आदमी बाते करते हुए और नारे लगाते हुए दिखाई देते हैं, तो कासिम उन्हें माँ-बहनों की मोटी-मोटी गालियाँ देता है और तीन चार आदमियों को मार देता है। जब एक लाश से टकराकर गिर जाता है, तब उसे सिर्फ शरीफन की नंगी तस्वीर दिखाई देती है और वह तस्वीर उसकी आँखों से पिघलकर उसके बदन में शीशे की तरह उतर जाती है। वह अपनी लड़की के बलात्कार और खून का प्रतिशोध लेने के लिए बाजार में गंडासा लेकर घुमता रहता है और गालियाँ देता हुआ एक घर के सामने आता है। उसका किवाड़ तोड़ने का प्रयास करता है और चिल्लाता रहता है तब अंदर उसे एक पंद्रह-सोलह साल की लड़की दिखाई देती है जो घबराई हुई होती है। तब कासिम अंदर घुस जाता है और उस लड़की पर बरस पड़ता है। इस दरम्यान वह बेहोश होती है और कासिम को यह ध्यान भी नहीं रहता है कि उसने उसको गला दबाकर मार दिया है। कासिम को जब होश आता है तो सामने नंगी लड़की पड़ी हुई दिखाई देती है। यह दृश्य देखते ही उसका मर्ग खून बर्फ की तरह ठंड़ा हो जाता है। उस लड़की में उसे अपनी शरीफन नजर आती है। वह उस लडकी का बदन कंबल से ढ़ँकता है। इतने में उस लड़की का बाप वहाँ आता है और उसके वहाँ आने के बारे में पूछता है। तो कासिम अपना मुँह दोनों हाथों में छुपाते हुए बोलता है, 'मेरी शरीफन !' और उस लड़की का बाप चिल्लाता है, 'विमला - विमला !'

विभाजन दोनों क्वाम के कई लोग नहीं चाहते थे। लेकिन कुछ लोगों की वजह से यह हुआ और दंगे छिड़ गए। इसमें वह लोग भी अनायासे आ गए जो बेकसूर थे। गलतियाँ दोनों मजहब के लोगोंद्वारा हुईं। कई बेकसूर मारे गए। अनजाने में और बेकसून होने के बावजूद आए आपत्ती के कारण होश खोकर वो भी दंगो मे शामिल हुए, शिकार बनें। यही प्रस्तुत कहानीद्वारा बताया गया है।

सियाह हाशिये

वैसे तो इसमें अनेक छोटी-छोटी कहानियाँ, किस्से तथा चुटकुलें हैं। जो मंटोने अलग-अलग विषयों पर बड़े ही समर्पकता से लिखे हैं। विभाजन तथा अन्य छोटी-छोटी बिंदूओं का, समस्याओं का तथा अपने इर्दगिर्द अनुभव किए गए स्थितियों के परिणामस्वरूप यह हाशिए मंटोने लिखे हैं। इन छोटी-छोटी चुटकुलों में बहुत बड़ा आशय छुपा हुआ है। तथा इनका असर जोरों से दिमाखपर बैठता है। यह चुटकुले या सियाह हाशियें

इस प्रकार हैं -

बेखबरी का फायदा, जूता, मुनासिब कारवाई, इस्लाह, पठानिस्तान, घाटे का सौदा, मिजाजपुर्सी, खबरदार, निगरानी में, हैवानियत, रिआयत, उलाहन, आराम की जरूरत, किस्मत, दावते-अमल, पेशबन्दी, मिस्टेक, मजदूरी, शान्ति, बँटवारा, करामात, हमेशा की छुट्टी, हलाल या झटका, सफाई पसंदी।

इन हाशियों में विभाजन के समय के दंगों की स्थिति, उसके परिणाम एवं उन हालातों में बनी लोगों की मानसिकता, बिभत्सता, सेक्स, इंसानियत का अंत, आक्रोश, निर्दयता आदि का उद्घाटन किया है। इन में छोटी-बड़ी तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को, समस्याओं को बड़े ही मनोवैज्ञानिक धरातलपर उजागर कर सार्थकता से सियाह हाशियों के रूप में मंटोने प्रस्तुत किया है।

ठंडा गोश्त

ईशरसिंह और कुलवंत कौर इस कहानी के दो पात्र हैं। कुलवंत कौर ईशरसिंह की रखैल या पत्नी है। ईशरसिंह घर से आठ दिन तक लापता था। आठ दिन के बाद वह घर आता है। कुलवंत कौर ईशरसिंह को बार-बार पूछती है कि वह कहाँ गायब हुआ था। पर वह कुछ नहीं कहता है या कुछ ऐसी-वैसी कहके बात टालता है। कुलवंत उसे प्यार से पूछती है तो वह उसे कुछ बिना बताए ही उसके साथ यौन संबंध शुरू कर देता है। पर कुलवंत उसे टालती है लेकिन वह उसे कुछ प्यार से बोलकर यौन संबंध फिर से शुरू करता है। वह उसे खुदा का वास्ता देकर कहने के लिए कहती है। फिर भी वह कुछ नहीं बताता है। कुलवंत भी उसे अब यौन संबंध में साथ देती है। दोनों एक दुसरे को काफी मसलते हैं और जब उसे कुलवंत कौर कहती है कि अब पत्ता फेक दो मतलब आखिरी मोड लो या खत्म कर दो तो वह धाँपता हुआ एक बाजू में लेट जाता है। कुलवंत को पक्का यकीन होता है कि वह बदला हुआ है। जोर देकर पुछने के बाद भी वह बताता नहीं। लेकिन उस दुसरी औरत के बारे में वह बार-बार उसे पूछती है और कीरपान लेकर उसपर वार करती है जिससे वो घायल हो जाता है उसके बाद वह कहता है कि जिस मकान पर उसने धावा बोल दिया था वहाँ के गहने, पैसे चुराए। छे आदमियों को मार भी ड़ाला और उसी घर की एक सुंदर लड़की को वह उठाकर ले गया और उसे कंधेपर डालकर चल पड़ा। फिर एक झाडी के पीछे जाकर उसे लिटा दिया और उसपर झुका तो वह मरी हुई थी, वह सन्न हो गया। इसका उसपर कुछ ऐसा असर होता है कि उसकी मर्दानगी निकल जाती है। भोग, सेक्स की दृष्टि से वह नामर्द हो जाता है।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने बँटवारे की विभीषिका बताई है। बँटवारे की वजह से जो बेकसूर थे उन्हें किस तरह की तकलीफ से गुजरना पड़ा। और इस कहानी में वह लड़की जिसे ईशरसिंह उठा ले जाता है वह मासूम जान उसके कंधेपर ही दहशत से मर जाती है और यह सद्मा ईशरसिंह को नामर्द बना देता है। इस तरह के कई बुरे परिणामों से समाज को गुजरना पड़ा था। यही लेखक बताना चाहते हैं।

निष्कर्ष :-

मंटो ने जो जिया वही लिखा। अपनी जिंदगी में आए हुए अनुभवों को कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। हालाकि उनकी जिंदगी बहुत कम थी लेकिन इस कम वक्त में भी उन्होंने काफी प्रभावी साहित्य का निर्माण किया जिनमें समाज एवं इंसान के विवधि पैलूओं को उद्घाटित करते हुए उनके चित्र खिंचे। अपनी पैनी दृष्टि से जिन बारिकियों को चुनकर उन्होंने अपनी कहानियों में उतारा वे निश्चित ही अद्भुत हैं। अपनी जिंदगी में उन्हें बड़ी परेशानियों से गुजरना पड़ा। इस दौर में काफी मात्रा में समाज से, अलग-अलग व्यक्तियों से, स्थितियों से, घटनाओं से मुटभेड़ हुई और वहीं वे अपनी कहानियों में लिखते गए। छुपाने की आदत उन्हें नहीं थी, जो लिखा वह साफ-साफ और बेझिझक लिखा। जीवन की उन परिस्थितिओं को, बिंदुओं को उन्होंने स्पर्श किया है जो निश्चयही अद्वितीय, बेमिससाल हैं, जो लेखक को महानता की ऊँचाई पर ले जाते हैं।

मंटो ने अपने अधिकतर कहानियों में किस्सागोई की है। उसकी ज्यादातर कहानियों के अंत बड़े ही प्रभावमय, चोटमय हैं जिनका असर मन-मस्तिष्क में छा जाता है।

उन्होंने अपनी कहानियाँ अपनी शैली में लिखी हैं जिनकी गहराईयों में उतरकर उनकी गहरी सोच को समझा जा सकता है। वे उर्दू के लेखक थे जाहिर है उनके लेखन में उर्दू शब्दों की भरमार है। उनकी कई कहानियों को अश्लील करार दिया गया लेकिन उसका सफाया उन्होंने अदालत तथा अपने लेखों में दिया है और जो निश्चित ही अश्लिलता से मुक्त हैं। समाज के विभिन्न पहलूओं को तथा नंगी सच्चाईयों को उन्होंने उजागर करने की कोशिश की है।

उनकी ज्यादातर कहानियों में मुख्य पात्र 'मैं' है तथा वो उनके वैयक्तिक अनुभव की कहानियाँ हैं, जहाँ वे खुद मौजूद हैं और उन्हें जो महसूस हुआ वह लिखा है। मनोवैज्ञानिकता उनकी कहानियों में खासकर दिखाई देती है। उनकी कहानियों में सामाजिक,

यौन-मनोविज्ञान विषयक, विभाजन एवं वेश्या-जीवन के संबंध में कहानियाँ काफी मिलती हैं। उनकी कहानियों में ईंसानियत एवं हैवानियत भी शामिल हैं।

उनकी कहानियाँ वैयक्तिक अनुभव, विभाजन के समय की विभीषिका, उसका परिणाम, पैदा हुए हालात, उससे बनी लोगों की मानसिकता, प्रकृति, मजहब की दीवार, स्वतंत्रता मिलने के बाद की स्थिति, नए कायदेकानून, अपना अलगपन, व्यवस्था के प्रति विद्रोह, आक्रोश, मजबूरी, बेबसी, दर्दजनक हालात, सामाजिक समस्या, लोगों की मानसिकता, वेश्याजीवन और उससे संबंधित विभिन्न पहलू, सम्पर्क में आए तथा अनुभव किए व्यक्तित्व, मनोवैज्ञानिक गुत्थियाँ, यौन-मनोविज्ञान, धोखाधडी तथा अंधविश्वास के बने शिकार, बाल-मनोविज्ञान, इच्छा, मिलावट, ममता, हैवानियत, इंसानियत का अंत तथा इंसानियत की हैं।

विभिन्न विषयों को अपनी कहानियों में समेटकर समाज की तस्वीर तथा सच्चाई को अपनी कहानियों के माध्यम से सामने रखा है जो निश्चय ही अद्‌वितिय हैं और मंटो को महान कहानीकार बनाते हैं।

* * *

संदर्भ :

1. मंटो की कहानियाँ, संपादक : नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ 26
2. पाक्षिक सारिका, 16 मई 1979 : अंक 2, मंटो विशेषांक, पृष्ठ 15
3 वही, पृष्ठ 15
4. मंटो की कहानियाँ, संपादक : नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ 31
5. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 6
6. वही, पृष्ठ 6
7. मंटो की कहानियाँ, संपादक : नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ 73
8. वही, पृष्ठ 83-84
9. वही, पृष्ठ 144
10. मंटो की तीस कहानियाँ, चयन तथा भूमिका : निलाभ, पृष्ठ 8
11. मंटो की कहानियाँ, संपादक : नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ 279
12. वही, पृष्ठ 488